लखनऊ

शुक्रवार 30 मई 2025

वर्ष : 10 । अंक: 314

मूल्य : 1 रुपये

पृष्ठ : 8

हिंदी दैनिक

आर्यावर्त क्रांति

UPHIN/2014/57034

यदि कोई व्यक्ति अपने धन को ज्ञान अर्जित करने में ख़र्च करता है, तो उससे उस ज्ञान को आप रुक सकते हैं लेकिन समय नहीं रुकता। - बेंजामिन फ्रैंकलिन

TODAY WEATHER

DAY 37° Hi

NIGHT 26° Low

संक्षेप

पीओके कहेगा, मैं भारत हूं, पाक अधिकृत कश्मीर के लोग हमारे अपने हैं : राजनाथ सिंह

नई दिल्ली, एजेंसी। पाकिस्तान पर निशाना साधते हुए रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने कहा कि आतंकवाद का कारोबार चलाना 'कॉस्ट इफेक्टिव' नहीं है, बल्कि इसकी एक भारी कीमत अदा करनी पड़ सकती है, इसका अंदाजा आज पाकिस्तान को हो चुका है। रक्षा मंत्री ने कहा, ऑपरेशन सिंदूर में, पूरे देश की जनता ने मेक इन इंडिया अभियान की सफलता को देखा, समझा और महसूस किया है। आज यह साबित हो चुका है कि मेक इन इंडिया भारत की सुरक्षा और समृद्धि दोनों के लिए जरूरी है। भारत एक तरफ आर्थिक सफलता की सीढ़ियों पर तेजी से बढ़ते हुए आज, विश्व की चौथी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनकर उभरा है, और जल्द ही यह तीसरी बड़ी अर्थव्यवस्था के रूप में नजर आएगा। रक्षा मंत्री गुरुवार को दिल्ली में सीआईआई की एक बैठक को संबोधित कर रहे थे। यहां उन्होंने कहा, मैं मानता हूँ कि पाक अधिकृत कश्मीर के लोग हमारे अपने हैं, हमारे परिवार का हिस्सा हैं। हम एक भारत श्रेष्ठ भारत के संकल्प के लिए प्रतिबद्ध हैं। हमें यह पूर्ण विश्वास है कि हमारे वो भाई जो आज हमसे भौगोलिक और राजनीतिक रूप से अलग हैं, वे भी अपने स्वाभिमान, आत्मा की आवाज और स्वेच्छा से भारत की मुख्य धारा में कभी न कभी जरूर लौटेंगे। वहां के अधिकांश लोग भारत के साथ गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं, कुछ गिने-चुने ही हैं, जिन्हें भटकाया गया है।

आलोचक और ट्रोल्स अपने विचार रखने को स्वतंत्र' कांग्रेस नेता के 'सुपर प्रवक्ता' कटाक्ष पर थरूर का पलटवार

नई दिल्ली। कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने कांग्रेस नेता उदित राज को नाम लिए बगैर 'अति उत्साही' बताया है। थरूर के मुताबिक उनके भारत के आतंकवाद विरोधी अभियान पर दिए बयान को 'निहित स्वार्थों' के लिए 'तोड़-मरोड़ कर' पेश किया जा रहा है। तिरुवनंतपुरम के सांसद ने पनामा से बोगोटा (कोलंबिया) जाते समय गुरुवार को एक्स पर लिखा कि वह स्पष्ट रूप से हालिया आतंकवादी हमलों की जवाबी कार्रवाई के बारे में बोल रहे थे न कि पिछले युद्धों के बारे में। दरअसल, कांग्रेस नेता उदित राज ही नहीं, बल्कि पार्टी नेताओं के एक वर्ग ने पनामा में आतंकवाद पर मोदी सरकार की 'जीरो टॉलरेंस नीति' की थरूर द्वारा की गई प्रशंसा पर नाराजगी जताते हुए उन्हें भाजपा का 'सुपर प्रवक्ता' करार दिया था। थरूर ने अपने कांग्रेसी सहयोगी का नाम लिए बिना उन पर निशाना साधा और एक्स पर लिखा, एलओसी के पार भारतीय वीरता के बारे में मेरी कथित अज्ञानता के बारे में गुस्सा करने वाले उन अति उत्साही लोगों के लिए... मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहूंगा कि केवल आतंकवादी हमलों के खिलाफ की गई कार्रवाई पर मैं बोल रहा था, न कि पिछले युद्धों के बारे में। उन्होंने आगे लिखा, आलोचक और ट्रोल्स स्वतंत्र हैं अपने 'विकृत विचार' साझा करने के लिए क्योंकि उनके पास और भी बेहतर काम हैं। थरूर ने कहा कि उनकी टिप्पणियों से पहले हाल के वर्षों में हुए कई हमलों का संदर्भ दिया गया था। उन्होंने कहा- मेरा बयान हाल के वर्षों में हुए कई हमलों को लेकर था, जिस दौरान एलओसी और आईबी पर जवाबी कार्रवाई नियंत्रित और बाधित दोनों थीं।

पश्चिम बंगाल पीएम मोदी का ममता पर जोरदार हमला, 'बंगाल में मची चीख-पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार'

नई दिल्ली, एजेंसी। पश्चिम बंगाल के अलीपुरद्वार में जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि 21वीं सदी में भारत नए सामर्थ्य के साथ समृद्धि की नई गाथा लिख रहा है और विकसित राष्ट्र बनाने के लिए हर नागरिक दिन-रात जुटा हुआ है। पीएम मोदी ने इस बात पर जोर दिया कि विकसित भारत के लिए विकसित पश्चिम बंगाल का होना अत्यंत आवश्यक है।

प्रधानमंत्री ने कहा, 'बंगाल को फिर उसी भूमिका में आना होगा, जो कभी यहां की पहचान थी। इसके लिए जरूरी है कि पश्चिम बंगाल फिर से Knowledge का, ज्ञान-विज्ञान का केंद्र बने। बंगाल मेक इन इंडिया का एक बहुत बड़ा सेंटर बने। बंगाल अपनी विरासत पर गर्व करते हुए, उसे संरक्षित करते हुए तेज गति से आगे बढ़े।' उन्होंने बताया कि केंद्र की भाजपा सरकार 'पूर्वोदय' की नीति पर काम कर रही है और पिछले दशक में पश्चिम बंगाल के विकास के लिए हजारों-करोड़ का निवेश किया है।

पश्चिम बंगाल कई संकटों से घिरा: पीएम मोदी

पीएम मोदी ने पश्चिम बंगाल को कई गंभीर संकटों से घिरा बताया। उन्होंने कहा कि राज्य में समाज में हिंसा और अराजकता फैली हुई है, माताओं और बहनों में असुरक्षा का भाव है और उनके साथ जघन्य अपराध हो रहे हैं। उन्होंने नौजवानों में फैल रही घोर निराशा और बेतहाशा बेरोजगारी को भी एक बड़ा संकट बताया। प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार को चौथा संकट बताते हुए कहा कि इससे यहां के सिस्टम पर लोगों का विश्वास लगातार कम हो रहा है। पांचवां संकट उन्होंने सत्ताधारी पार्टी की स्वार्थी राजनीति को बताया, जो गरीबों का हक छीन रही है। मुर्शिदाबाद और मालदा की घटनाओं का जिक्र करते हुए पीएम मोदी ने कहा कि ये घटनाएं TMC सरकार की निर्ममता का उदाहरण हैं।

केंद्र सरकार के विकास कार्य और TMC की 'निर्ममता'

प्रधानमंत्री ने केंद्र सरकार द्वारा पश्चिम बंगाल के विकास के लिए किए गए प्रयासों पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि हाल ही में सिटी गैस डिस्ट्रीब्यूशन परियोजना का शिलान्यास किया गया है। केंद्र के प्रयासों से कल्याणी एम्स की स्थापना हुई है और न्यू अलीपुरद्वार रेलवे स्टेशन का पुनर्विकास किया गया है। उन्होंने यह भी जिक्र किया कि उत्तर भारत में माल ढुलाई और व्यावसायिक गतिविधियों को बढ़ाने के लिए डेडिकेटेड फ्रेट कॉरिडोर (DFC) परियोजना विकसित की जा रही है। उन्होंने 'सबका साथ, सबका विकास' के मंत्र के साथ भाजपा सरकार की पश्चिम बंगाल के विकास के प्रति प्रतिबद्धता दोहराई। पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल की जनता को अब TMC सरकार के सिस्टम पर भरोसा नहीं है और उनके पास अब सिर्फ कोर्ट का ही आसरा है। इसी संदर्भ में उन्होंने कहा, 'पूरा बंगाल कह रहा है - बंगाल में मची चीख-पुकार, नहीं चाहिए निर्मम सरकार!'

भ्रष्टाचार, बेरोजगारी और जनता का हक छीनने का आरोप

प्रधानमंत्री ने भ्रष्टाचार को युवाओं, गरीबों और मध्यमवर्गीय परिवारों के लिए सबसे बड़ा बोझ बताया। उन्होंने पश्चिम बंगाल शिक्षक भर्ती घोटाले का जिक्र करते हुए कहा कि TMC सरकार ने हजारों शिक्षकों और उनके परिवारों का भविष्य बर्बाद कर दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि यह सिर्फ कुछ हजार शिक्षकों का विनाश नहीं, बल्कि पूरे शिक्षा प्रणाली का पतन है। उन्होंने कहा कि TMC सरकार अपनी गलतियों को स्वीकार करने से इनकार कर रही है और इसके बजाय अदालतों को दोष दे रही है। पीएम मोदी ने यह भी कहा कि देशभर में 70 वर्ष से ऊपर के बुजुर्गों को 5 लाख रुपये तक मुफ्त इलाज की सुविधा मिल रही है, लेकिन TMC सरकार पश्चिम बंगाल में इस सुविधा को लागू नहीं करने दे रही है।

चाय बागान श्रमिकों का मुद्दा

प्रधानमंत्री ने चाय बागान श्रमिकों के मुद्दे को भी उठाया और कहा कि राज्य सरकार की flawed नीतियों के कारण कई चाय बागान बंद हो रहे हैं। उन्होंने पीएफ डिफॉल्ट्स को 'शर्मनाक' बताया और कहा कि TMC श्रमिकों की गाढ़ी कमाई लूटने की कोशिश कर रही है और दोषियों को बचाने का प्रयास कर रही है। उन्होंने आश्वासन दिया कि भाजपा ऐसा कभी नहीं होने देगी। अंत में, पीएम मोदी ने 22 अप्रैल को पहलगाम में हुए आतंकी हमले का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि उस बर्बरता के बाद पश्चिम बंगाल में बहुत गुस्सा था और वह जनता के आक्रोश को भलीभांति समझते थे। उन्होंने कहा कि आतंकवादियों ने हमारी बहनों का सिंदूर मिटाने का दुस्साहस किया। हमारी सेना ने उनको सिंदूर की शक्ति का अहसास करा दिया।

उत्तर प्रदेश में 5 आईपीएस अधिकारियों की हुई ट्रांसफर-पोस्टिंग, इन लोगों का नाम शामिल

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में 5 आईपीएस अधिकारियों का ट्रांसफर कर दिया गया है। इन अधिकारियों में 2008 बैच के आनंद सुरेश राव, 2009 बैच के शिवासिम्पी चनप्पा, 2009 बैच के दिनेश कुमार पी, 2010 बैच के संजीव त्यागी और 2010 बैच के शिवहरि मीना शामिल हैं। बता दें कि वर्तमान में आनंद सुरेश राव गोरखपुर में बतौर पुलिस उपमहानिरीक्षक तैनात थे। इसके अलावा शिवासिम्पी चनप्पा वाराणसी में अपर पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था), दिनेश कुमार पी बस्ती में पुलिस उपमहानिरीक्षक, संजीव त्यागी पुलिस उपमहानिरीक्षक, कारागार प्रशासन एवं सुधार सेवाएं, लखनऊ और शिवहरि मीना लखनऊ में पुलिस उपमहानिरीक्षक, तकनीकी सेवाएं में तैनात थे।

इस बीच उत्तर प्रदेश के जनपद हापुड़ में यूपी स्पेशल टास्क फोर्स (UP STF) की नोएडा यूनिट और दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल टीम ने हापुड़ पुलिस के साथ मिलकर एक मुठभेड़ में लॉरेंस बिश्नोई गैंग के शार्प शूटर नवीन कुमार को ढेर कर दिया है। हापुड़ कोतवाली क्षेत्र के प्रीत विहार में हुई इस मुठभेड़ में घायल होने के बाद नवीन कुमार को अस्पताल ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया। मिली जानकारी के अनुसार, मृतक नवीन कुमार लॉरेंस बिश्नोई गैंग का शार्प शूटर था। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल टीम और यूपी एसटीएफ की नोएडा यूनिट को नवीन के बारे में इनपुट मिला था, जिसके बाद वे उसे पकड़ने के लिए लगातार उसका पीछा कर रहे थे। खुद को पुलिस से घिरा हुआ देखकर बदमाश नवीन ने पुलिस पर फायरिंग कर दी, जिसके जवाब में पुलिस की गोली लगने से वह घायल हो गया।

इन आईपीएस अधिकारियों की हुई ट्रांसफर-पोस्टिंग

बता दें कि आनंद सुरेश राव को लखनऊ में पुलिस उपमानिरीक्षक, तकनीकी सेवाएं, शिवासिम्पी चनप्पा को गोरखपुर में पुलिस उपमहानिरीक्षक, संजीव त्यागी को पुलिस उपमहानिरीक्षक, बस्ती और शिवहरि मीना को अपर पुलिस आयुक्त (कानून एवं व्यवस्था) पुलिस कमिश्नेरट, वाराणसी के पद पर तैनात किया गया है। बता दें कि बीते दिनों राज्य सरकार द्वारा कई आईएएस और आईपीएस अधिकारियों का भी तबादला किया गया था। उस दौरान राज्य के महाराजगंज, बलिया, पीलीभडीत और हरदोई जिलों के डीएम यानी जिलाधिकारी भी बदल दिए गए थे।

जम्मू-कश्मीर : सुरक्षाबलों को बड़ी सफलता, लश्कर के दो आतंकियों ने किया सरेंडर; बड़ी मात्रा में हथियार बरामद

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के शोपियां में लश्कर के दो आतंकियों ने पुलिस के आगे सरेंडर किया है। इन आतंकवादियों की पहचान इरफान बशीर और उजैर सलाम के रूप में हुई है। बीते दिन सुरक्षाबलों ने जिले के बसकुचन इलाके में तलाशी अभियान चलाया था।

इसी बीच दो आतंकियों ने सुरक्षाबलों के आगे सरेंडर कर दिया। इन आतंकियों के पास से हथियार भी बरामद हुए हैं। उनके पास से दो एके-56 राइफलें, 4 मैगजीन, 102 राउंड (7.62म39 मिमी), 2 हैंड ग्रेनेड, 2 पाउच आदि बरामद किए गए हैं। दोनों आतंकियों के खिलाफ संबंधित धाराओं के तहत एफआईआर दर्जकर ली गई है और आगे की जांच जारी है।

26/11 के बाद लश्कर मुख्यालय पर हमला न कर कांग्रेस ने किया था विश्वासघात : प्रदीप भंडारी

नई दिल्ली, एजेंसी। भाजपा ने गुरुवार को कांग्रेस पार्टी पर जोरदार हमला किया और आरोप लगाया कि कांग्रेस ने कई बार देश की सुरक्षा से समझौता किया है। इसमें 26/11 के आतंकवादी हमले का भी जिक्र है। उस वक्त देश के विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी ने कड़ी कार्रवाई की मांग की थी, लेकिन सोनिया गांधी और राहुल गांधी ने उसे मंजूरी नहीं दी थी। भाजपा के राष्ट्रीय प्रवक्ता प्रदीप भंडारी ने एक्स पर एक पोस्ट में कहा कि 26/11 मुंबई आतंकवादी हमलों के बाद कांग्रेस के पास पाकिस्तान के मुरीदके में लश्कर-ए-तैयबा (एलईटी) के मुख्यालय पर हमला करने का मौका था। लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया क्योंकि सोनिया गांधी और राहुल गांधी इसके खिलाफ थे।

उन्होंने अपने दावे को मजबूत करने के लिए पूर्व विदेश सचिव शिवशंकर मेनन की किताब 'चॉइसेसः इनसाइड द मेकिंग ऑफ इंडियाज फॉरेन पॉलिसी' के कुछ हिस्से शेयर किए। मेनन ने किताब में लिखा है कि हमले के दौरान और उसके बाद सरकार में कई अनौपचारिक बातचीत और बैठकें हुईं, जिसमें जवाबी कार्रवाई पर चर्चा हुई। तब के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार एम.के. नारायणन ने राजनीतिक नेतृत्व के साथ मिलकर सैन्य और अन्य विकल्पों पर विचार किया। सैन्य प्रमुखों ने प्रधानमंत्री को अपनी राय भी दी। मेनन ने अपनी किताब में लिखा है कि तब के विदेश मंत्री प्रणब मुखर्जी भी जवाबी कार्रवाई के समर्थन में थे।

एलन मस्क ने छोड़ा ट्रंप प्रशासन का साथ, सलाहकार पद से दिया इस्तीफा

नई दिल्ली, एजेंसी। एलन मस्क ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के वरिष्ठ सलाहकार के रूप में अपनी भूमिका से हटने की घोषणा की है, जिससे सरकारी दक्षता विभाग (डीओजीई) के साथ विशेष सरकारी कर्मचारी के रूप में उनका कार्यकाल समाप्त हो जाएगा। टेस्ला और स्पेसएक्स के प्रमुख और अरबपति उद्यमी एलन मस्क को संघीय नौकरशाही को सुव्यवस्थित करने और बेकार सरकारी खर्च को कम करने के प्रयासों का नेतृत्व करने का काम सौंपा गया था। बुधवार को एक्स पर हुए मस्क ने अपनी बात रखी। उन्होंने सेवा का अवसर देने के लिए आभार जताया।

मस्क ने लिखा, "विशेष सरकारी कर्मचारी के रूप में मेरा निर्धारित कार्यकाल समाप्त हो रहा है, ऐसे में मैं राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को सरकारी खर्च को कम करने के दिए गए अवसर के लिए धन्यवाद देना चाहता हूं। उन्होंने कहा, "डीओजीई मिशन समय के साथ और मजबूत होता जाएगा।

मस्क की यह घोषणा ट्रंप के विधायी एजेंडे की आधारशिला की सार्वजनिक रूप से आलोचना करने के ठीक एक दिन बाद आई है। सीबीएस के साथ एक साक्षात्कार में टेस्ला के सीईओ मस्क ने ट्रंप की ओर से कहे गए "बड़े सुंदर विधेयक" पर निराशा व्यक्त की, जिसमें व्यापक कर कटौती के साथ-साथ कठोर आव्रजन प्रवर्तन का प्रावधान है। इस विधेयक को "बहुत बड़ा व्यय विधेयक" बताते हुए मस्क ने कहा कि यह उनके विभाग के लक्ष्यों के विपरीत है। उन्होंने कहा, "इससे संघीय घाटा बढ़ता है और डीओजीई का काम कमजोर होता है।

बिल की ब्रांडिंग पर कटाक्ष करते हुए मस्क ने कहा, "मुझे लगता है कि एक बिल बड़ा भी हो सकता है और सुंदर भी। लेकिन मुझे नहीं पता कि यह दोनों भी हो सकता है या नहीं।

ट्रंप ने बुधवार को ओवल ऑफिस में पत्रकारों के साथ संक्षिप्त बातचीत के दौरान मस्क की आलोचना का जवाब दिया। विधेयक का बचाव करते हुए ट्रंप ने विधेयक पर बातचीत करने में आने वाली चुनौतियों को स्वीकार किया। उन्होंने कहा, "मैं इसके कुछ पहलुओं से खुश नहीं हूं, लेकिन मैं इसके अन्य पहलुओं से रोमांचित हूं।"

देश में कोरोना के एक्टिव मामले बढ़कर 1200 से ज्यादा हुए

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत में कोरोना वायरस के मामलों में एक बार फिर बढ़ोतरी देखी जा रही है। स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुसार, देश में सक्रिय मामलों की संख्या 1200 से अधिक हो गई है। केरल, महाराष्ट्र और दिल्ली जैसे राज्यों में मामलों में तेजी से इजाफा हो रहा है। राज्यों को निगरानी और सतर्कता बढ़ाने के निर्देश दिए गए हैं।

दिल्ली के राम मनोहर लोहिया (RML) अस्पताल में कोविड-19 आइसोलेशन वार्ड बनाया गया है। पहले यहां चार मरीज भर्ती थे, जिनमें से दो की रिपोर्ट नेगेटिव आने के बाद अब केवल दो मरीज ही भर्ती हैं। दोनों मरीजों की स्थिति स्थिर बनी हुई है और वे अब बेहतर महसूस कर रहे हैं। उन्हें चार दिन पहले सांस लेने में

तकलीफ और तेज बुखार के कारण भर्ती कराया गया था।

मरीज के परिजन से बातचीत

PPE किट पहनकर मरीज के परिजन से बातचीत के दौरान अनुज द्विवेदी ने बताया, "मेरी मां की हालत स्थिर है, लेकिन अब भी कोविड पॉजिटिव हैं।" अनुज की मां चार दिन पहले आरएमएल अस्पताल में भर्ती हुई थीं। उन्हें पहले किडनी में इन्फेक्शन था, फिर अचानक सांस लेने में तकलीफ होने लगी। तबीयत बिगड़ने पर निजी अस्पताल ने उन्हें आरएमएल अस्पताल रेफर किया।

आरएमएल अस्पताल में कोविड की स्थिति

कोविड-19 वार्ड के नोडल ऑफिसर डॉ. पवन कुमार ने बताया कि फिलहाल अस्पताल में केवल दो मरीज भर्ती हैं और दोनों की हालत स्थिर है। डॉ. पवन ने बताया, 'हालांकि मौजूदा हालात गंभीर नहीं हैं, लेकिन लोगों को सतर्क रहने की जरूरत है। भीड़भाड़ से बचें और मास्क पहनें।' डॉ. पवन के अनुसार, कोविड का नया वेरिएंट पुराने वेरिएंट्स की तुलना में ज्यादा खतरनाक नहीं है। संक्रमित मरीजों में मुख्य रूप से खांसी और बुखार जैसे लक्षण देखने को मिल रहे हैं। हालांकि इसकी संक्रामकता के बारे में अभी कुछ स्पष्ट नहीं कहा जा सकता। उन्होंने बताया कि पहले की लहरों में मरीजों को ऑक्सीजन, वेंटिलेटर और ICU की जरूरत पड़ी थी, लेकिन फिलहाल ऐसी स्थिति नहीं है।

अस्पताल की तैयारियां पूरी

आरएमएल अस्पताल में ऑक्सीजन प्लांट पहले से चालू है और स्टाफ की भी पूरी व्यवस्था है। जरूरत पड़ने पर अस्पताल में बेड की संख्या 100 से बढ़ाकर 400 तक की जा सकती है। इसके अलावा अस्पताल में एक अलग आइसोलेशन सेंटर भी तैयार है।

सुप्रीम कोर्ट को मिले तीन नए जज, कॉलेजियम की सिफारिश को केंद्र सरकार ने किया मंजूर

नई दिल्ली, एजेंसी। सुप्रीम कोर्ट को तीन नए जज मिले हैं। केंद्रीय कानून मंत्री अर्जुन राम मेघवाल ने बताया कि सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम की सिफारिश पर सरकार ने न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया, विजय बिश्नोई और एएस चंदुरकर को सुप्रीम कोर्ट का न्यायाधीश नियुक्त है।

जानकारी के अनुसार, सुप्रीम कोर्ट कॉलेजियम ने सोमवार को कर्नाटक हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस एनवी अंजारिया, गुवाहाटी हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस विजय बिश्नोई और बॉम्बे हाई कोर्ट के जस्टिस एएस चंदुरकर को सुप्रीम कोर्ट के जज के तौर पर नियुक्त करने की सिफारिश की थी।

अर्जुन राम मेघवाल ने बताया कि संविधान द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए भारत के मुख्य न्यायाधीश के परामर्श के बाद राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया, जस्टिस विजय बिश्नोई और जस्टिस एएस चंदुरकर को सुप्रीम कोर्ट के जज के तौर पर नियुक्त किया है। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश संजीव खन्ना, न्यायमूर्ति अभय एस ओका और न्यायमूर्ति ऋषिकेश रॉय के सेवानिवृत्त होने के बाद शीर्ष न्यायालय में न्यायाधीशों के तीन मौजूदा रिक्त पदों के लिए उनके नामों की सिफारिश की गई थी।

कौन हैं न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया

न्यायमूर्ति एनवी अंजारिया ने अगस्त 1988 में वरिष्ठ अधिवक्ता एसएन शेलत के अधीन गुजरात हाई कोर्ट में वकालत शुरू की। उन्होंने संवैधानिक, सिविल, श्रम और सेवा मामलों को संभाला और विभिन्न राज्य निकायों के लिए स्थायी वकील के रूप में कार्य किया। उन्हें 21 नवंबर, 2011 को गुजरात उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया और 6 सितंबर, 2013 को वे स्थायी न्यायाधीश बन गए। उन्होंने 25 फरवरी, 2024 को कर्नाटक उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली।

कौन हैं न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई

न्यायमूर्ति विजय बिश्नोई को 8 जुलाई, 1989 को अधिवक्ता के रूप में नामांकित किया गया था। उन्होंने राजस्थान उच्च न्यायालय और जोधपुर में केंद्रीय प्रशासनिक न्यायाधिकरण में सिविल, आपराधिक, संवैधानिक, सेवा और चुनाव मामलों सहित कई तरह के मामलों को संभाला। उन्होंने केंद्र सरकार के स्थायी वकील (2000-2004) के रूप में कार्य किया और राजस्थान सरकार के विभिन्न विभागों का प्रतिनिधित्व किया।

न्यायमूर्ति बिश्नोई को 8 जनवरी, 2013 को राजस्थान उच्च न्यायालय का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया और 7 जनवरी, 2015 को वे स्थायी न्यायाधीश बन गए। उन्हें गुवाहाटी उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया और 5 फरवरी, 2024 को उन्होंने शपथ ली।

कौन हैं न्यायमूर्ति अतुल एस चंदुरकर चंदुरकर

न्यायमूर्ति अतुल एस चंदुरकर चंदुरकर ने 21 जुलाई, 1988 को एक वकील के रूप में नामांकन कराया और मुंबई में वरिष्ठ अधिवक्ता बीएन नाइक के चैंबर में अपने कानूनी करियर की शुरुआत की। 1992 में, उन्होंने अपना अभ्यास नागपुर में स्थानांतरित कर दिया, जहाँ वे विभिन्न अदालतों में पेश हुए और कई तरह के कानूनी मामलों की पैरवी की। उन्हें 21 जून, 2013 को बॉम्बे उच्च न्यायालय का अतिरिक्त न्यायाधीश नियुक्त किया गया।

'जिस भरोसे से आश्रय दिया... उसी का कत्ल कर दिया', मासूम बच्चियों के हत्यारों को फांसी की सजा

आर्यावर्त संवाददाता

हाथरस। हाथरस की विशेष न्यायाधीश एससी एसटी एक्ट कोर्ट ने प्रवक्ता की दो मासूम बेटियों के हत्यारों को फांसी की सजा सुनाई है। विशेष न्यायाधीश एससी एसटी एक्ट कोर्ट रामप्रताप सिंह ने फैसला सुनाते हुए टिप्पणी की है कि जिस भरोसे से आश्रय दिया, अभियुक्तों ने उसी का कत्ल कर दिया। इस कृत्य से समाज पर यह प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है कि कोई भी व्यक्ति अपने रिश्तेदारों पर अविश्वास प्रकट करना शुरू कर देगा। विषम परिस्थितियों में उनकी मदद करने से पीछे हटेगा। उन्हें अपने घर में आश्रय देने से भी गुरेज करेगा।

फैसले में कहा है कि यह निर्विवाद रूप से स्वीकृत तथ्य है कि अभियुक्त 22 जनवरी को नौ बजे वीरांगना के घर पर आए थे। वीरांगना और उनके पति छोटे लाल, दोनों बच्चियां उनको अपना रिश्तेदार होने के नाते घर में आश्रय देकर सो गए थे। उनके द्वारा यह सोचा भी नहीं गया होगा कि वीरांगना के रिश्ते के भतीजे उनकी हत्या करने आएं हैं। वीरागंना की पुत्रियों की यह अंतिम रात है।

परिवार को अभियुक्तों व उनसे जुड़े सामाजिक रिश्तों पर उन्हें पूर्ण विश्वास था, लेकिन अभियुक्तों ने वीरांगना व उसके परिजनों के विश्वास का कत्ल कर दिया। अदालत ने कहा है कि वीरांगना का पति छोटे लाल घटना के लगभग एक वर्ष पहले से हुए लकवे से पीड़ित होने के कारण असहाय थे, हत्यारों ने वीरांगना की दोनों अबोध और निर्दोष बच्चियों की हत्या कर उनके वंश को नष्ट कर दिया और वीरांगना को असहाय बना दिया।

दोषियों के युवा होने और पुनर्वास के तर्क को किया खारिज

न्यायालय में अभियुक्तगणों के अधिवक्ता की ओर से तर्क दिया कि वह युवा हैं और समाज में उनके पुनर्वास की संभावना है। न्यायालय ने इस तर्क को खारिज करते हुए कहा कि अभियुक्तों ने कुछ रुपयों के लालच में फतेहपुर से आकर अबोध बच्चियों की गर्दनों पर कई-कई जानलेवा चोटें पहुंचाकर बर्बरता पूर्वक निर्मम हत्या की गई है। वीरांगना और छोटे लाल की गर्दन पर भी चोटें पहुंचाकर जान से मारने की कोशिश की है, घृणित कृत्य किया है। अभियुक्त की कम आयु सजा कम करने का एक मात्र आधार नहीं हो सकता है। इस तर्क पर विश्वास नहीं किया जा सकता है कि वह फिर से रुपयों के लालच में अपराध नहीं करेंगे।

तब तक फांसी पर लटकाया जाए, जब तक मृत्यु न हो जाए

विशेष न्यायाधीश एससी एसटी एक्ट कोर्ट राम प्रताप सिंह ने अपना फैसला सुनाते हुए कहा कि दोनों बच्चियों की निर्ममता से हत्या की गई, दोषियों तब तक फांसी पर लटकाया जाए, जब तक उनकी मृत्यु न हो जाए। हत्या की धारा में दोनों को मृत्यु दंड एवं 20-20 हजार रुपये से अंर्थदंड से भी दंडित किया है।

आपराधिक षडयंत्र के तहत दोनों को मृत्यु दंड एवं 20-20 हजार रुपये, जानलेवा हमले के प्रयास में 10-10 वर्ष के सश्रम कारावास और 10-10 हजार रुपये का अर्थदंड लगाया है। आर्म्स एक्ट के मामले में एक-एक वर्ष के सश्रम कारावास व एक-एक हजार रुपये के अर्थदंड, एससीएसटी एक्ट की धारा में आजीवन कारावास एवं 20 हजार रुपये का अर्थदंड से दंडित किया है।

कत्ल करते समय नहीं आया बच्चियों के प्रति दयाभाव

अदालत अपने फैसले में इस बात का भी उल्लेख किया है कि इनकी साजिश का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि पहले से घर में आ गए। खाना खाया, चाचा-चाचा कहते रहे, लेकिन उनके मस्तिष्क में पल रहे पूर्व नियोजित प्लान में कोई बदलाव नहीं किया गया। न ही अबोध बच्चियों पर कोई दया आई।

हाथरस: प्रवक्ता की दो मासूम बेटियों के हत्यारों को फांसी की सजा

विशेष न्यायाधीश एससीएसटी एक्ट ने आशीर्वाद धाम कॉलोनी में चार माह पहले हुई प्रवक्ता छोटेलाल गौतम की दो बेटियों सृष्टि (12) और विधि (6) की गला रेतकर हत्या करने के दो दोषियों विकास और लल्लू पाल को फांसी की सजा सुनाई है। इस घटना में छोटेलाल और उनकी पत्नी वीरांगना की भी जान लेने की कोशिश की गई थी। फैसला सुनाते हुए न्यायाधीश ने कहा है कि अभियुक्तों के इस कृत्य से समाज पर यह प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है कि कोई भी व्यक्ति अपने रिश्तेदारों पर अविश्वास प्रकट करना शुरू कर देगा। अभियुक्तों का अपराध विरल से विरलतम की श्रेणी में आता है। दोषियों को मृत्युदंड की सजा देने के साथ अर्थदंड भी लगाया गया है।

भतीजे सोनेलाल ने दुबई से पूरे परिवार के खात्मे की दी थी सुपारी

प्रॉपर्टी कब्जाने के लिए प्रवक्ता के भतीजे सोनेलाल ने दुबई से पूरे परिवार के खात्मे की सुपारी दी थी और गांव के रिश्ते के भतीजे विकास ने अपने दोस्त लल्लू के साथ मिलकर वारदात की। 23 जनवरी की रात को पुलिस ने दोनों को मुठभेड़ के बाद गिरफ्तार कर लिया था। सोनेलाल के दुबई में होने के कारण उसके खिलाफ विवेचना अभी लंबित है।

छोटेलाल गौतम जिला फतेहपुर के जहानाबाद क्षेत्र के गांव किशनपुर कपली के रहने वाले हैं और चंदपा क्षेत्र के गांव मीतई स्थित जवाहर स्मारक इंटर कॉलेज में भूगोल विषय के प्रवक्ता के पद पर तैनात हैं। वह आगरा रोड स्थित आशीर्वाद कॉलोनी में मकान बनाकर रहे रहे हैं।

विकास और दोस्त ने किया था चाकू से हमला

इस मामले में गवाही के दौरान छोटेलाल की पत्नी वीरांगना ने बताया कि विकास निवासी किशनपुर कपली गांव के रिश्ते से उनके पति का भतीजा लगता है। वह अपने दोस्त लल्लू के साथ घटना वाली रात 9.10 बजे उनके घर पहुंचे और उनके घर पर रुके थे। रात करीब डेढ़ बजे विकास और उसके दोस्त ने पहले छोटेलाल पर चाकू से हमला किया। उसके बाद सृष्टि और विधि का चाकू से गला काट दिया।

इस दौरान वीरांगना की आंख खुल गई और विरोध करने पर उन पर भी हमला किया। वीरांगना भागकर गेट तक पहुंचीं और शोर सुनकर पड़ोसी भी एकत्र हो गए, जिसके बाद दोनों भाग गए थे। लहूलुहान दंपती को उपचार के लिए अलीगढ़ मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया था।

चंद रुपयों के लिए किया विश्वास का कत्ल : अदालत

विशेष न्यायाधीश एससीएसटी एक्ट राम प्रसाद सिंह ने फैसला सुनाते हुए बताया कि वीरांगना की अबोध बच्चियों से हत्यारों की कोई रंजिश भी नहीं थी। वीरांगना की अबोध व मासूम बच्चियों ने जीवन के विभिन्न रंग और संसार को ठीक प्रकार से देखा भी नहीं था। दोनों बच्चियां अपना प्राकृतिक जीवन भी ठीक प्रकार से प्रारंभ भी नहीं कर पाई थीं। विश्वास का कत्ल करके, रिश्तों को ताक पर रखकर चंद रुपयों के लालच में यह क्रूरतापूर्ण घटना कारित की गई है।

ऐसे रहा घटनाक्रम

22 जनवरी की रात हुई थी वारदात
25 मार्च को न्यायालय ने संज्ञान लिया
29 मार्च को आरोप निर्धारित किए गए
28 मई को अदालत ने फैसला सुनाया

हत्या की साजिश पर न्याय की मांग को लेकर बढ़ा दलित समाज का आक्रोश

सुल्तानपुर। राष्ट्रीय अध्यक्ष विजय राणा चमार पर हुई हत्या की साजिश को लेकर दलित समाज में भारी आक्रोश व्याप्त है। इसी क्रम में 30 मई को एक राष्ट्रीय प्रतिनिधि मंडल लखनऊ रवाना होगा। दलित समाज के प्रतिनिधि डीजीपी से मुलाकात कर निष्पक्ष जांच और सख्त कार्रवाई की मांग करेंगे। प्रतिनिधि मंडल गुरुवार सुबह लगभग 8 बजे सुल्तानपुर कार्यालय से लखनऊ के लिए रवाना होगा। हालांकि मिली जानकारी के अनुसार, अब तक डीजीपी कार्यालय से मुलाकात के लिए कोई औपचारिक अनुमति नहीं मिली है। प्रतिनिधि मंडल द्वारा एक सप्ताह पूर्व ही डीजीपी को पत्र लिखकर समय मांगा गया था, लेकिन अभी तक कोई उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है। इस संदर्भ में राष्ट्रीय प्रवक्ता और पूर्व शासकीय अधिवक्ता (राजस्व) एडवोकेट तिलकधारी ने बताया कि "हमने पूरी प्रक्रिया का पालन करते हुए पत्र भेजा है, लेकिन अब तक जवाब नहीं आया है। इसके बावजूद हमें उम्मीद है कि डीजीपी साहब व्यस्तताओं के बीच से समय निकालेंगे और हमारी पीड़ा को समझने का प्रयास करेंगे। दलित समाज इस हत्या साजिश को एक गंभीर साजिश मानते हुए जल्द न्याय की मांग कर रहा है। लखनऊ में प्रस्तावित इस मुलाकात को लेकर पूरे प्रदेश में चर्चा है, और नजरें अब इस बात पर टिकी हैं कि डीजीपी दलित प्रतिनिधियों की पीड़ा सुनने के लिए समय देते हैं या नहीं।

आगरा का वो पनवारी कांड... जिसमें 34 साल बाद आया फैसला, 80 में 36 दोषी ; 27 की हो चुकी है मौत

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

आगरा। आगरा का पनवारी कांड तो आपको याद ही होगा। अरे! वही पनवारी कांड, जिसकी वजह से आगरा में जातीय हिंसा भड़क उठी थी। पूरे शहर में 10 दिनों तक कर्फ्यू लगा था। इस घटना की आंच की तपिश में राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली और प्रदेश की राजधानी लखनऊ भी दहक उठे थे। खुद तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी को चलकर आगरा आना पड़ा था। इसी मामले में अब आगरा की कोर्ट ने अपना फैसला सुनाया है। जातीय झगड़े के इस मामले में अदालत ने 100 में से 36 आरोपियों को दोषी करार दिया है। वहीं 15 लोगों को बरी किया है। मामले में 27 अन्य आरोपियों की पहले ही मौत हो चुकी है।

खबर में आगे बढ़ने से पहले जान लेते हैं कि यह पनवारी कांड है क्या। यह मामला 21 जून 1990 का है। उस दिन सिकंदरा थाना क्षेत्र के गांव पनवारी में रहने वाले चोखेलाल जाटव की बेटी मुंद्रा की बारात आई थी। दूल्हा रामदीन सदर थाना क्षेत्र के नगला पद्मा का रहने वाला था। बारात तो पनवारी पहुंच गई, लेकिन चढ़त जाटों के मुहल्ले से होनी थी। जैसे ही बारात की चढ़त शुरू हुई, जाट समुदाय के लोग अपने घरों के बाहर आ गए और चढ़त रूकवा दी। इस घटना को लेकर बड़ा बवाल हुआ। अगले दिन यानी 22 जून को पुलिस ने चढ़त कराने की कोशिश की, लेकिन जाट समुदाय के 5-6 हजार लोगों की भीड़ ने बारातियों को घेर लिया।

जला दिए गए थे जाटव परिवारों के घर

इस दौरान भीड़ को भगाने के लिए पुलिस ने बल प्रयोग किया। वहीं जाट समुदाय के लोगों ने भी जवाब के तौर पर पथराव और फायरिंग की। इस घटना में गोली लगने से सोनी राम जाट की मौत हो गई। इस पूरे घटनाक्रम का यह टर्निंग पॉइंट था। जैसे ही यह खबर फैली, पूरे आगरा में लोग सड़कों पर उतर आए। जाटव परिवारों के दर्जनों घरों में आग लगा दी गई। देखते ही देखते पूरा शहर दंगे की चपेट में आ गया। हालात को देखते हुए डीएम आगरा ने शहर में 10 दिन के लिए कर्फ्यू लगा दिया था। चूंकि मामला दलितों और सवर्णों के बीच टकराव का था, इसलिए खबर मिलते ही पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी आगरा पहुंच गए थे।

विधायक का भी आया था दंगे में नाम

तत्कालीन केंद्रीय मंत्री रामजी लाल सुमन ने बारात की चढ़त कराने पहुंचे थे। दंगा भड़कने पर तत्कालीन जिलाधिकारी आगरा अमल कुमार वर्मा और एसएसपी कर्मवीर सिंह ने शांति कायम करने के लिए लोगों के साथ बैठकें की थी। इस मामले में सिकंदरा थाना पुलिस ने 22 जून 1990 को छह हजार अज्ञात लोगों के खिलाफ बलवा, जानलेवा हमला और एसएसी-एसटी एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज किया था। इस मुकदमे में फतेहपुर सीकरी से विधायक चौधरी बाबूलाल का नाम सामने आया था।

80 के खिलाफ हुई थी चार्जशीट

स्पेशल कोर्ट के डीजीसी हेमंत दीक्षित के मुताबिक इस मामले में 80 लोगों के खिलाफ चार्जशीट हुई थी। हालांकि इनमें 27 आरोपियों की मौत हो चुकी है। इनमें जो 53 आरोपी जीवित हैं, उनमें से कोर्ट ने तथ्यों और सबूतों के आधार पर 36 लोगों को दोषी माना है। वहीं तीन आरोपियों के गैरहाजिर होने पर उनके खिलाफ गैर जमानती वारंट जारी किया गया है। कोर्ट ने जिन लोगों को दोषी माना है, उनमें एक आरोपी 115 साल के बुजुर्ग भी हैं।

बस कंडक्टर से की थी लूट...लखनऊ में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़, एक अरेस्ट

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में पुलिस और बदमाशों के बीच मुठभेड़ की खबर है। बताया जा रहा है कि पुलिस और बदमाशें के बीच ये मुठभेड़ बुधवार देर रात लखनऊ के आलमबाग इलाके में हुई। पुलिस की कार्रवाई में एक बदमाश के पैर में गोली लगी है। मुठभेड़ के बाद उसे गिरफ्तार कर लिया गया। उसको अस्पताल भेजा गया है। बदमाश का नाम गौरव कनोजिया बताया जा रहा है। गिरफ्तार बदमाश के पास से 2700 सौ रुपए, तमंचा, कारतूस और बाइक बरामद हुई है।

गौरव बस कंडक्टर से लूट का मुख्य आरोपी है। पुलिस मामले में एक आरोपी की गिरफ्तारी कर चुकी है। वहीं बताया जा रहा है कि एक बदमाश शुभम उर्फ शिवम अंधेरे का फायदा उठाकर पुलिस को चकमा देकर मौके से फरार हो गया।

जानकारी के अनुसार, लखनऊ के आलमबाग बस टर्मिनल के बाहर मेट्रो स्टेशन के नीचे 22 मई को रात में एक लूट की घटना हुई थी। 22 मई को रात लगभग 12 बजकर 15 मिनट पर तीन बाइक सवार बदमाशों ने आजमगढ़ डिपो के कंडक्टर से लूट की। तीनों ने कंडक्टर का बैग लूट लिया।

पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी थी

कंडक्टर संविदा पर कार्यरत हैं। उनका नाम चमन कुमार है। कंडक्टर चमन कुमार ने बताया कि बैग में 15,800 रुपए नगद के साथ टिकट, भार टिकट और ई-टिकट मशीन रखी थी। लूट की घटना के तुरंत बाद उन्होंने तुरंत पुलिस कंट्रोल रूम को इसकी जानकारी दी। इसके बाद से ही पुलिस आरोपियों की तलाश में जुटी थी। पुलिस ने बताया कि देर रात आलमबाग पुलिस ने एसीपी कैंट दफ्तर के पास बाइक सवार दो बदमाशों की घेराबंदी की।

बदमाशों ने पुलिस को देखते ही की फायरिंग

पुलिस को देखते ही बदमाशों ने फायरिंग कर दी।जवाबी कार्रवाई में एक बदमाश के पैर में गोली लगी। उसकी पहचान गौरव कनोजिया के रूप में की गई है। पुलिस ने उसे अस्पताल में भर्ती करवाया है। पुलिस ने बताया कि उसके पास से 2700 सौ रुपए, तमंचा, कारतूस और बाइक बरामद की गई है। उसका साथी शुभम उर्फ शिवम मौके से फरार हो गया। मामले में पुलिस बीते सोमवार को लुटेरे नाका निवासी पीयूष वर्मा की गिरफ्तारी की थी।

अचानक चली गोली से एसआई घायल, हालत स्थिर

सुलतानपुर। कोतवाली नगर में गुरुवार दोपहर एक घटना घटी। एसआई जगदीश सिंह छुट्टी लेकर घर जाने से पहले अपनी सर्विस पिस्टल दीवान के पास जमा करने गए थे। इसी दौरान दीवान द्वारा मैगजीन निकालते समय अचानक रिवॉल्वर से फायर हो गया। गोली एसआई जगदीश की जांघ में जा लगी। फायर की आवाज सुनते ही कोतवाली में मौजूद अन्य पुलिसकर्मी मौके पर पहुंच गए। घायल एसआई को तत्काल राजकीय मेडिकल कॉलेज ले जाया गया। डॉक्टरों ने उनका इलाज किया और वर्तमान में उनकी स्थिति स्थिर बताई जा रही है। पुलिस अधीक्षक कुंवर अनुपम सिंह ने घटना की जानकारी लेते हुए एसआई जगदीश से फोन पर बात कर उनका हाल-चाल जाना। उन्होंने बताया कि घटना की गहन जांच राजपत्रित अधिकारी द्वारा की जा रही है। एसआई जगदीश सिंह पहले भी नगर क्षेत्र की विभिन्न पुलिस चौकियों पर अपनी सेवाएं दे चुके हैं और वर्तमान में कोतवाली नगर में तैनात हैं।

जांच में नहीं निकला गाय का मीट, अलीगढ़ में चार मुस्लिम युवकों से की गई थी मारपीट

आर्यावर्त संवाददाता

अलीगढ़। अलीगढ़ के अलहदादपुर गांव से हाल ही में एक मामला सामने आया, जहां 4 मुस्लिम युवकों पर शक था कि वो गाय का मीट लेकर जा रहे हैं और इसी के चलते उनके साथ बेरहमी से मारपीट की गई थी। हालांकि, अब जांच के बाद सामने आया है कि वो मीट गाय का नहीं था।

अलीगढ़ में युवकों के साथ हुई मारपीट की घटना के बाद पुलिस प्रशासन अलर्ट मोड में है। ADM सिटी अमित कुमार भट्ट ने बताया कि लंबी जांच रिपोर्ट में पाया गया कि मीट गाय का नहीं था। व्यापारियों से मिले मीट के चार नमूने जांच के लिए मथुरा भेजे गए थे। जांच में पाया गया कि मीट भैंस का था। एडीएम सिटी ने कहा कि भ्रामक स्थिति ना रहे इसके लिए संचालकों के माध्यम से डेडीकेटेड गाड़ी से लाइसेंस धारकों को मीट पहुंचने का काम किया जाएगा।

पुलिस ने क्या कहा?

डेडीकेटेड वाहन इंसुलेटिड भी रहेंगे और वाहन का नंबर पुलिस और खाद्य औषधि विभाग के पास रहेगा, इससे दोनों विभाग अलर्ट रहेंगे और गाड़ी के नंबर से जांच-पड़ताल करने में आसानी रहेगी। ऐसे हालात दोबारा पैदा न हो, इसी को लेकर ADM सिटी अमित कुमार भट्ट ने कहा, पहले से ही लाइसेंस धारकों को फैक्ट्री से मीट दिया जाता था अब इन पर और निगरानी की जाएगी।

क्या है पूरा मामला?

हाल ही में अलहदादपुर से मामला सामने आया था, जहां 4 युवकों पर प्रतिबंधित मीट ले जाने का शक किया गया था और इसी शक के आधार पर इन युवकों के साथ बेरहमी से मारपीट की गई थी। हालांकि, इन लोगों के साथ जब मारपीट की जा रही थी और यह लहूलुहान हो गए, तभी बीच में पुलिस आ गई और पुलिस ने व्यापारियों को बचाया। इसी के बाद हमलावर और पीड़ित दोनों पक्षों की तरफ से थाना हरदुआगंज में मुकदमा दर्ज कराया गया। इसी के बाद पुलिस ने मारपीट करने वाले आरोपियों को गिरफ्तार किया। पुलिस ने अब तक विजय कुमार गुप्ता, विजय बजरंगी, लवकुश को गिरफ्तार कर लिया है। साथ ही 27 मई को एक और आरोपी भानु प्रताप उर्फ भूरा को भी गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि, चारों घायल व्यापारी अभी मेडिकल कॉलेज में भर्ती हैं।

जांच में क्या-क्या खुलासा हुआ?

इस मामले की जांच की जा रही है। जहां जांच में बड़ा खुलासा हुआ कि मीट गाय का नहीं था। वहीं जांच में यह भी खुलासा हुआ है कियुवक मीट व्यापारी थे और उनके पास वैध लाइसेंस भी था। वो अल-तबारक नाम की मीट फैक्ट्री से मीट ला रहे थे। उनके पास से फैक्ट्री की रसीद भी मिली।

"एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य" विषय पर निंबध व पोस्टर प्रतियोगिता आयोजित

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

बल्दीराय/सुल्तानपुर। डॉ राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या के द्वारा पर्यावरण संरक्षण और जागरूकता के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रम के अंतर्गत आज 29 मई को गनपत सहाय पी.जी. कॉलेज सुल्तानपुर में महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ.ओम प्रकाश पाण्डेय बजरंगी की प्रेरणा और महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.अंग्रेज सिंह "राणा"के मार्गदर्शन में '"एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य"' विषय पर एक निबंध और पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें 30 से अधिक छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। निबंध प्रतियोगिता में एम.ए.चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा पलक उपाध्याय तथा पोस्टर प्रतियोगिता में बी.ए.चतुर्थ सेमेस्टर की छात्रा सानिया अंसारी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्राचार्य द्वारा विजेता प्रतिभागियों को

प्रमाण पत्र वितरित कर उन्हें प्रोत्साहित किया गया और साथ ही अपने संबोधन में पर्यावरण के महत्व पर विस्तार से चर्चा करते हुए आगामी पर्यावरण दिवस पर सभी को कम से कम 5 पौधे लगाने की बात कही।प्रो. नीलम तिवारी ने अपने संबोधन में लोगों को पॉलीथिन के बैग के स्थान पर कपड़े के बैग का प्रयोग करने की सलाह दी। कार्यक्रम की संयोजक प्रो.गीता त्रिपाठी ने छात्र छात्राओं को कड़ी मेहनत और अनुशासित जीवन के लिए प्रोत्साहित किया और प्राचार्य एवं प्राध्यापकों का आभार व्यक्त किया। इस प्रतियोगिता में निर्णायक मंडल की भूमिका प्रो. नीलम तिवारी, प्रो.गीता त्रिपाठी और डॉ.विष्णु शंकर अग्रहरि ने निभाई। इस कार्यक्रम में चित्रकला के प्राध्यापक विशाल विश्वकर्मा ने विशेष सहयोग प्रदान किया।इस प्रतियोगिता में पलक, खुशी, सानिया, दिव्या, नंदनी, स्नेहा, मेविस, शिफा, नेहा, तबस्सुम आदि छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया।

जिस चाचा ने फेक मार्कशीट से भतीजे को दिलवाई सरकारी नौकरी, उसी ने 14 साल बाद बता दिया फर्जीवाड़े का राज, चली गई जॉब

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

अमरोहा। उत्तर प्रदेश के अमरोहा में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां फर्जी मार्कशीट लगाकार पुलिस में 14 साल तक नौकरी करने का मामला सामने आया है। हैरानी की बात यह है कि कांस्टेबल को नौकरी के लिए जिसने फर्जी मार्कशीट बनवा कर दी, उसने शिकायत भी की है और जांच में पूरा मामला सामने आने के बाद कांस्टेबल को नौकरी से बर्खास्त किया गया है। यह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि खुद इस कांस्टेबल का सगा चाचा है। कांस्टेबल की बर्खास्तगी के बाद पुलिस ने अब उसके चाचा के खिलाफ भी केस दर्ज कर लिया है।

जानकारी के मुताबिक उत्तर प्रदेश में बलिया जिले के गांव सेमरी का रहने वाला अखिलेश कुमार पुलिस में भर्ती होना चाहता था, लेकिन हाईस्कूल और इंटर की परीक्षा

में फेल हो जा रहा था। ऐसे में उसके सगे चाचा विनोद ने फर्जी मार्कशीट बनवा दिया और इसी मार्कशीट को लगाकर साल 2009 में अखिलेश उत्तर प्रदेश पुलिस में भर्ती भी हो गया। इसी बीच करीब दो साल पहले किसी बात को लेकर अखिलेश की अपने चाचा विनोद के साथ ठन गई। ऐसे में विनोद ने भी गोपनीय शिकायत दे दी और बता दिया कि अखिलेश की मार्कशीट फर्जी है।

कांस्टेबल ने खोल दी चाचा की पोल

पुलिस ने इस शिकायत की जांच कराई और शिकायत सही पाए जाने पर अखिलेश को नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया। कांस्टेबल अखिलेश ने ज्योति इंटर कॉलेज की मार्कशीट लगाई थी। पुलिस ने इस मार्कशीट को यूपी बोर्ड में भेजकर चेक कराया तो पता चला कि असली मार्कशीट को स्कैन कर फर्जी मार्कशीट तैयार किया गया है। इसमें रोल नंबर और नाम मैच नहीं कर रहे थे। मामले की जांच अमरोहा के एडिशनल एसपी ने की थी। इस दौरान उन्होंने कांस्टेबल अखिलेश को अपना पक्ष रखने के लिए बुलाया। इस दौरान अखिलेश ने जो खुलासा किया, वह सुनकर एडिशनल एसपी भी हैरान रह गए। उन्होंने अखिलेश के खिलाफ कार्रवाई के साथ ही उसके चाचा के खिलाफ भी मामला दर्ज करा दिया है।

भतीजे को फंसाने के चक्कर में खुद फंसा चाचा

अमरोहा पुलिस के आरआई घनश्याम के मुताबिक आरोपी कांस्टेबल अखिलेश कुमार की पोस्टिंग अमरोहा में थी। इसलिए अमरोहा पुलिस ने उसे बर्खास्त कर दिया है। चूंकि उसके लिए फर्जी मार्कशीट उसके चाचा द्वारा ही बनवाने की बात सामने आई है, इसलिए अमरोहा देहात थाने में उसके चाचा के खिलाफ भी धोखाधड़ी की धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। उन्होंने बताया कि पुलिस मामले की जांच कर रही है। इस मामले में यदि जरूरी हुआ तो आरोपियों को अरेस्ट भी किया जाएगा।

उत्तर प्रदेश सरकार और मोनाश यूनिवर्सिटी के बीच ऐतिहासिक एमओयू, शिक्षा में आएगा वैश्विक बदलाव

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश सरकार और ऑस्ट्रेलिया की प्रतिष्ठित मोनाश यूनिवर्सिटी के बीच एक महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इस साझेदारी का उद्देश्य प्रदेश के बेसिक, माध्यमिक और उच्च शिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत छात्रों एवं शिक्षकों को शोध-अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं तकनीकी सहयोग के माध्यम से शिक्षा की गुणवत्ता को एक नई ऊँचाई देना है।

मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने इस अवसर पर कहा कि उत्तर प्रदेश सरकार शिक्षा को केवल डिग्री अर्जन का माध्यम नहीं, बल्कि राज्य के समग्र विकास की धुरी मानती है। उन्होंने इस साझेदारी को नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप बताते हुए कहा कि यह बहुआयामी अधिगम, कौशल विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को गति देगा।

मोनाश यूनिवर्सिटी की विशेषज्ञता

मोनाश यूनिवर्सिटी, जो विश्व की अग्रणी अनुसंधान आधारित संस्थाओं में से एक है, ने इस साझेदारी के माध्यम से उत्तर प्रदेश के शिक्षकों और छात्रों को वैश्विक स्तर के प्रशिक्षण और शोध के अवसर प्रदान करने का संकल्प लिया है। विश्वविद्यालय के कुलपति, जो हिंदी भाषा में निपुण हैं और जिन्होंने बिजनौर (उत्तर प्रदेश) में अपने पूर्व प्रवास के दौरान गहन सामाजिक-सांस्कृतिक समझ विकसित की है, ने मुख्यमंत्री से संवाद में कहा कि यह समझौता भारत और ऑस्ट्रेलिया के संबंधों को एक नए शैक्षणिक और सांस्कृतिक आयाम पर ले जाएगा।

प्रो. मनीषा की भूमिका

इस समझौते को मूर्त रूप देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली दिल्ली विश्वविद्यालय की पूर्व प्रोफेसर और वर्तमान में मोनाश यूनिवर्सिटी से संबद्ध प्रो. मनीषा ने बताया कि मोनाश में प्रतिवर्ष लगभग 30,000 शिक्षकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, जिनमें अफगानिस्तान और म्यांमार जैसे युद्धग्रस्त देशों के शिक्षक भी शामिल हैं। अब उत्तर प्रदेश के शिक्षकों को भी इसी स्तर का प्रशिक्षण सुलभ हो सकेगा।

उपस्थित गणमान्य व्यक्ति

इस अवसर पर मोनाश यूनिवर्सिटी से प्रो. क्रेग जेफ्री, डिप्टी वाइस चांसलर (इंटरनेशनल) एवं सीनियर वाइस प्रेसिडेंट, डॉ ग्रेग कुसैक, चीफ ऑफ कोर्सवर्क ऑफिसर एवं डिप्टी डीन, प्रोफेसर मनीषा प्रियम, ऑस्ट्रेलियाई उच्चायोग से डिप्टी हाई कमिश्नर निक मैककैफ्री, जॉर्ज थिवेओस, मंत्री-परामर्शदाता (शिक्षा एवं अनुसंधान), नथानियल वेब, फर्स्ट सेक्रेटरी (शिक्षा एवं अनुसंधान), क्लार्क, परामर्शदाता ए/जी (आर्थिक) टॉम ओवरटन, प्रो. राणा पी. सिंह, कुलपति, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय, प्रदेश सरकार के बेसिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभागों के मंत्रीगण, वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारीगण एवं मोनाश यूनिवर्सिटी के प्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री ने ऑस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल का गर्मजोशी से स्वागत करते हुए उन्हें उत्तर प्रदेश की 'एक जिला-एक उत्पाद' योजना के अंतर्गत निर्मित विशिष्ट उत्पाद भेंट किए, जो राज्य की सांस्कृतिक विविधता और उद्यमशीलता का प्रतीक हैं।

लकड़ी लगाने को लेकर दो पक्षों में मारपीट, पुलिस ने दोनों को लिया हिरासत में

लखनऊ। चिनहट थाना क्षेत्र स्थित भैसा कुण्ड घाट पर गुरुवार को लकड़ी लगाने को लेकर दो पक्षों के बीच विवाद ने मारपीट का रूप ले लिया। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस ने तत्काल कार्रवाई करते हुए दोनों पक्षों को हिरासत में ले लिया और शांति व्यवस्था बहाल की।प्राप्त जानकारी के अनुसार, झगड़ा पप्पू (35 वर्ष), पुत्र शहजाद, निवासी मकान नंबर 132 राम रहीम एकता नगर हतासी खेड़ा, थाना चिनहट और रूपेश कुमार (29 वर्ष), पुत्र टीकाराम, निवासी फैजुल्लागंज पानी की टंकी के पास पूरनिया, थाना मड़ियांव, लखनऊ के बीच हुआ। दोनों ही व्यक्ति भैसा कुण्ड घाट पर लकड़ी लगाने का कार्य करते हैं।प्रथम दृष्टया यह स्पष्ट हुआ कि घाट पर लकड़ी लगाने को लेकर दोनों में वाद-विवाद हुआ, जो मारपीट तक पहुंच गया। पुलिस ने दोनों को मौके से हिरासत में लिया और पूछताछ शुरू कर दी है।

डॉ. शकुंतला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में समापन संवाद सत्र सम्पन्न, न्यूज़ लेटर का विमोचन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय में कुलपति आचार्य संजय सिंह की अध्यक्षता में शैक्षणिक सत्र 2024-25 की समाप्ति एवं ग्रीष्मकालीन अवकाश से पूर्व समस्त शिक्षकों के साथ संवाद सत्र का आयोजन किया गया। इस अवसर पर विश्वविद्यालय की वर्षभर की उपलब्धियों पर आधारित डीएसएमएनआरयू न्यूज़ लेटर का विमोचन कुलपति द्वारा किया गया।संवाद सत्र में कुलसचिव रोहित सिंह, परीक्षा नियंत्रक डॉ. अमित कुमार राय, अधिष्ठाता (शैक्षणिक) प्रो. वी. के. सिंह, एवं रिसर्च एंड डेवलपमेंट निदेशक प्रो. अश्विनी दुबे मंचासीन रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकवृंद की सहभागिता रही।कुलपति आचार्य संजय सिंह ने कहा कि ₹हमने न केवल समयबद्ध परीक्षाएं सफलतापूर्वक आयोजित कीं, बल्कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप शैक्षणिक व प्रशासनिक कार्यों को भी क्रियान्वित किया है। विश्वविद्यालय के सभी नियम-विनियम अब पूर्णतः संरचित हैं।₹ उन्होंने यह भी घोषणा की कि आगामी सत्र में पूरा परिसर वाई-फाई सुविधा से सुसज्जित होगा। साथ ही शिक्षकों को निर्देश दिया गया कि वे अवकाश के बाद कोर्स फोल्डर के साथ उपस्थित हों और प्रोजेक्ट कार्य संबंधित निकायों को समय पर प्रेषित करें।कार्यक्रम में मीडिया केंद्र के प्रभारी प्रो. यशवंत वीरोदय ने डीएसएमएनआरयू न्यूज़ लेटर के प्रकाशन को विश्वविद्यालय की छवि को सुदृढ़ करने और उसकी गतिविधियों को व्यापक स्तर तक पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम बताया।

कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने किया 'विकसित कृषि संकल्प अभियान–2025' का शुभारंभ, किसानों से किया सीधा संवाद

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश के कृषि मंत्री सूर्य प्रताप शाही ने गुरुवार को 'विकसित कृषि संकल्प अभियान-2025' के पहले दिन राजधानी के जहाँगीरपुर, गोसाईगंज में आयोजित कार्यक्रम में भाग लिया। इस अवसर पर उन्होंने किसानों से सीधा संवाद स्थापित किया, प्रगतिशील किसानों को सम्मानित किया और पौधारोपण कर अभियान का औपचारिक शुभारंभ किया।कृषि मंत्री ने किसानों से अपील की कि वे मृदा स्वास्थ्य कार्ड अवश्य बनवाएं, स्वयं को कृषि विभाग के पोर्टल पर पंजीकृत करें, प्राकृतिक खेती को अपनाएं और कृषि क्षेत्र में हो रहे नवीनतम अनुसंधानों व तकनीकों से खुद को अपडेट रखें। उन्होंने कहा कि प्रदेश की जलवायु के अनुसार फसलों की प्रजातियों का चयन करना बेहद जरूरी है। साथ ही उन्होंने कृषि वैज्ञानिकों से आह्वान किया कि वे खेतों में हो रहे किसानों के नवाचारों

को संज्ञान में लें और उनसे सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाएं।उन्होंने कहा कि यह अभियान 29 मई से 12 जून तक पूरे प्रदेश में चलेगा, जिसके दौरान किसानों को खरीफ फसलों की आधुनिकतम तकनीकों के साथ-साथ सरकारी योजनाओं की भी विस्तृत जानकारी दी जाएगी। इस दौरान प्रदेश के सभी 75 जनपदों में कुल 10,125 प्रशिक्षण और संवाद कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन कार्यक्रमों के माध्यम से किसानों को उन्नत बीजों, बीज शोधन, मिट्टी स्वास्थ्य सुधार, सह-फसली खेती, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई पद्धति, कृषि ड्रोन के उपयोग, प्राकृतिक खेती तथा औद्यानिक फसलों के विस्तार की जानकारी दी जाएगी।कृषि मंत्री ने बताया कि अभियान के दौरान प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, फार्मर रजिस्ट्री और फसल बीमा योजना के लाभार्थियों के पंजीकरण और सहायता पर भी विशेष ध्यान दिया जाएगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस अभियान का उद्देश्य किसानों को नवीनतम कृषि पद्धतियों से अवगत कराना और प्रदेश की कृषि उत्पादकता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाना है।इस अवसर पर भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. दिनेश सिंह, केंद्रीय उपोष्ण बागवानी अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. टी. दामोदरन, सीआईएसएच के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. पी.एल. सरोज सहित कई कृषि वैज्ञानिक और विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे। कृषि मंत्री ने अधिकारियों को अभियान को पूरी गंभीरता और सफलता के साथ संचालित करने के निर्देश दिए।

नाला उफनाया, रास्ते मे भरा गंदा पानी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। सुशान्त गोल्फ सिटी इलाके में पंडित दीन दयाल उपाध्याय नगर कालोनी के जाने वाले मुख्य मार्ग की सड़क पर बीते दस दिनों से नाला उफनाने के कारण रास्ते मे नाली का गंदा पानी भरा हुआ है। अर्जुनगंज से अहिमामऊ तक सड़क चौड़ी करण के दौरान पानी निकासी के लिए बनाया जा रहा नाला निर्माण के चलते पुराना नाला पूरी तरह चोक हो गया है। जिसके चलते रास्ते मे नाले का पानी भर गया है। क्षेत्र में रहने वाले व किसान यूनियन के नेता विनोद कुमार व स्थानीय लोगो ने इस बात की शिकायत पीब्लयूडी के अधिशाषी अभियंता के साथ नगर निगम से की लेकिन कोई इस समस्या से लोगो को निजात दिलाने नही पहुंचा

हैंडहेल्ड एक्स–रे तकनीक से अवैध शराब तस्करी पर कसेगा शिकंजा, आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल की अध्यक्षता में हुआ तकनीकी प्रदर्शन

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में अब अवैध शराब की तस्करी रोकने के लिए अत्याधुनिक तकनीक का सहारा लिया जाएगा। आबकारी विभाग ने गुरुवार को गन्ना संस्थान में हैंडहेल्ड एक्स-रे उपकरणों के प्रदर्शन के जरिए इस दिशा में एक ठोस पहल की। कार्यक्रम की अध्यक्षता आबकारी एवं मद्यनिषेध राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) नितिन अग्रवाल ने की। उन्होंने इसे अवैध शराब के विरुद्ध विभाग की कार्यप्रणाली को तकनीकी रूप से और अधिक प्रभावी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम बताया।इस मौके पर दो प्रमुख तकनीकी कंपनियों ने अपने-अपने हैंडहेल्ड एक्स-रे उपकरणों का प्रस्तुतीकरण और प्रदर्शन किया। इन उपकरणों के माध्यम से ट्रकों में छुपाकर लाई जा रही शराब की पेटियों का सफलतापूर्वक पता लगाया गया। प्रायोगिक तौर पर एक छोटे ट्रक में

शराब की पेटियां छुपा कर रखी गईं, जिन्हें दोनों कंपनियों के उपकरणों ने बिना ट्रक खोले ही पहचान लिया। यह तकनीक पहले से ही देश के कुछ सरकारी संगठनों में उपयोग की जा रही है और अब इसे उत्तर प्रदेश में लागू करने की दिशा में विचार किया जा रहा है।आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि विभाग का लक्ष्य ऐसी तकनीक को अपनाना है जो प्रभावी होने के साथ-साथ आर्थिक रूप से भी व्यवहारिक हो। उन्होंने कहा, "हम भविष्य में और भी अत्याधुनिक तकनीकों की खोज करेंगे ताकि प्रदेश में अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई को और अधिक प्रभावी व सशक्त किया जा सके। हमारा प्रयास है कि राजस्व की हानि रोकी जा सके और अपराधियों पर सख्त शिकंजा कसा जाए।"इस दौरान आबकारी आयुक्त आदर्श सिंह, अपर आयुक्त नवनीत सेहारा सहित विभाग के अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी मौजूद रहे।

शहीद कैप्टन अंशुमान सिंह के पिता रिटायर्ड सेना अधिकारी रवि प्रताप सिंह कांग्रेस में शामिल

लखनऊ। अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की नीतियों और जननायक राहुल गांधी की विचारधारा से प्रभावित होकर शहीद कैप्टन अंशुमान सिंह के पिता और सेना से सेवानिवृत्त अधिकारी रवि प्रताप सिंह ने गुरुवार को उत्तर प्रदेश कांग्रेस कार्यालय में कांग्रेस की सदस्यता ग्रहण की।प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष अजय राय की मौजूदगी में उन्होंने कांग्रेस की प्राथमिक सदस्यता ली। इस अवसर पर पूर्व मंत्री राजबहादुर, डॉ. मसूद अहमद, पूर्व विधायक अखिलेश प्रताप सिंह, सतीश अजमानी और प्रदेश कांग्रेस ज्वाइनिंग प्रभारी नितिन शर्मा भी मौजूद रहे।वि प्रताप सिंह का कांग्रेस परिवार में स्वागत करते हुए अजय राय ने उन्हें कांग्रेस का तिरंगा पट्टा पहनाया और सदस्यता कार्ड सौंपा। अजय राय ने कहा, 'यह हमारे लिए सम्मान की बात है कि एक शहीद के पिता, जो स्वयं भी सेना में रह चुके हैं।

जननायक राहुल गांधी का संसद में ऐतिहासिक भाषण" पुस्तक का विमोचन, अजय राय बोले—अब तानाशाही नहीं चलेगी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय में गुरुवार को एक विशेष कार्यक्रम में "जननायक राहुल गांधी का संसद में ऐतिहासिक भाषण" नामक पुस्तक का लोकार्पण किया गया। इस पुस्तक का संकलन बदरे आलम ने किया है और इसका प्रकाशन मौलाना अब्दुल कय्यूम रहमानी फाउंडेशन द्वारा किया गया है। कार्यक्रम का संचालन उत्तर प्रदेश कांग्रेस मीडिया विभाग के वाइस चेयरमैन मनीष हिंदवी ने किया, जिन्होंने पुस्तक के महत्वपूर्ण अंश भी पढ़कर सुनाए।पुस्तक के विमोचन के अवसर पर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष और पूर्व मंत्री अजय राय ने कहा, 'जननायक राहुल गांधी उम्मीद की एक लौ हैं इस अंधकार में। विपक्ष के नेता के रूप में उनका पहला भाषण न केवल ऐतिहासिक था बल्कि यह स्पष्ट संकेत था कि अब मोदी सरकार की तानाशाही प्रवृत्तियों को बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। भारत के संविधान

और लोकतंत्र की रक्षा के लिए यह संघर्ष अब निर्णायक मोड़ पर है।₹अजय राय ने पुस्तक के संकलनकर्ता बदरे आलम की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने इस ऐतिहासिक भाषण को दस्तावेजी रूप दिया है, जो जनचेतना को जगाने वाला है। उन्होंने कहा, 'मैं इस किताब के व्यापक प्रचार-प्रसार में अपना पूरा सहयोग दूंगा ताकि यह हर हाथ में पहुंचे।₹बदरे आलम ने पुस्तक के बारे में बोलते हुए कहा, 'राहुल गांधी का यह भाषण सिर्फ एक वक्तव्य नहीं था, यह एक ऐलान था—भारत के लोकतांत्रिक मूल्य, संविधान और बहुलतावादी विचार के पक्ष में। हर भारतीय को यह भाषण पढ़ना चाहिए ताकि उन्हें समझ में आ सके कि असली भारत क्या है।' इस अवसर पर कांग्रेस के कई वरिष्ठ नेता और कार्यकर्ता बड़ी संख्या में मौजूद रहे। मंच पर पूर्व मंत्री राजबहादुर, डॉ. मसूद अहमद, पूर्व विधायक अखिलेश प्रताप सिंह, सतीश अजमानी, दिनेश कुमार सिंह, मुकेश सिंह चौहान, रूद्र दमन सिंह चौहान, अमित श्रीवास्तव त्यागी, नितिन शर्मा, डॉ. जिया राम वर्मा, एडवोकेट प्रदीप सिंह, सुशील तिवारी सोनू पंडित, द्विजेन्द्र त्रिपाठी, वीरेन्द्र मदान, प्रमोद सिंह, डॉ. लालती देवी, सुशीला शर्मा, अनामिका यादव, नीलम सिंह, रमेश मिश्रा, अरशद आजमी, प्रभाकर मिश्रा, राजेश जायसवाल, शैलेन्द्र तिवारी, नितान्त सिंह, विनोद राय सहित अनेक कांग्रेसजन उपस्थित थे।यह आयोजन न केवल कांग्रेस कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणादायी रहा बल्कि यह भी संदेश दे गया कि राहुल गांधी की नेतृत्व क्षमता और विचारधारा को अब संस्थागत रूप में दर्ज किया जा रहा है—एक ऐसा दस्तावेज जो वर्तमान दौर के लोकतांत्रिक संघर्ष की पहचान बनेगा।

टीबी उन्मूलन और स्वास्थ्य ढांचे में उत्तर प्रदेश अग्रणी, ब्रजेश पाठक ने केंद्रीय मंत्री को दी जानकारी

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

लखनऊ। उत्तर प्रदेश स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में निरंतर प्रगति कर रहा है और अब टीबी उन्मूलन अभियान में पूरे देश में अग्रणी राज्य बन गया है। गुरुवार को उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री जगत प्रकाश नड्डा के साथ वर्चुअल बैठक में यह जानकारी साझा की। उन्होंने बताया कि प्रदेश में टीबी की जांचें पहले की तुलना में सात गुना बढ़ गई हैं और मरीजों को समय पर इलाज भी उपलब्ध कराया जा रहा है।उपमुख्यमंत्री ने बताया कि प्रदेश के सभी 75 जिलों में सौ दिवसीय सघन टीबी खोज अभियान चलाया गया है। साथ ही टीबी प्रयोगशालाओं का भी तेजी से विस्तार किया गया है। निःक्षय पोषण योजना के अंतर्गत पात्र लाभार्थियों को सीधे उनके बैंक खातों में कुल 251.40 करोड़ रुपये की

सहायता राशि भेजी गई है। हाल ही में जिला क्षयरोग अधिकारियों की दो दिवसीय कार्यशाला भी संपन्न हुई है।

बैठक में प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर मिशन (पीएम-अभीम) की प्रगति पर भी चर्चा हुई। ब्रजेश पाठक ने बताया कि इस योजना के अंतर्गत उत्तर प्रदेश को भारत सरकार से 4892.53 करोड़ रुपये की वित्तीय स्वीकृति मिली है। इस राशि से प्रदेश में 100 और 50 बेड के कुल 74 क्रिटिकल केयर ब्लॉक, 75 इंटीग्रेटेड पब्लिक हेल्थ लैब, 515 ब्लॉक पब्लिक हेल्थ यूनिट और 1670 स्वास्थ्य उपकेंद्रों के निर्माण की स्वीकृति दी गई है।उन्होंने बताया कि नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल की दो शाखाएं लखनऊ और वाराणसी में प्रस्तावित हैं, जिनमें लखनऊ शाखा का निर्माण कार्य प्रगति पर है, जबकि वाराणसी के लिए त्रिपक्षीय एमओयू पर हस्ताक्षर किए जा चुके हैं। साथ ही लखनऊ, वाराणसी और आगरा में मेट्रोपॉलिटन सर्विलांस यूनिट की स्थापना के लिए स्थल चयन किया जा चुका है और आवश्यक एमओयू भी हो चुका है। प्रदेश में हेल्थ इमरजेंसी ऑपरेशन सेंटर की स्थापना का कार्य भी प्रस्तावित है।ब्रजेश पाठक ने यह भी बताया कि हाल ही में प्रदेश में दस हजार नए उपकेंद्र खोले गए हैं, और 14,656 एएनएम की नियुक्ति कर उन्हें प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। शहरी क्षेत्रों में टीकाकरण कवरेज को बढ़ाने के लिए निजी चिकित्सालयों और मेडिकल कॉलेजों को जोड़ा गया है। अब प्रत्येक टीकाकर्मी यूविन पोर्टल का उपयोग कर टीकाकरण कर रहा है।इस बैठक के दौरान उपमुख्यमंत्री ने राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन और पीएम-अभीम योजनाओं में उत्तर प्रदेश सरकार के निरंतर सहयोग और प्रयासों की जानकारी देते हुए केंद्र सरकार से मार्गदर्शन और सहयोग की अपेक्षा भी जताई।

सीआईटीएस पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु आवेदन की तिथि बढ़ी, अब 4 जून तक कर सकते हैं आवेदन

लखनऊ। प्रादेशिक स्टाफ प्रशिक्षण एवं शोध केन्द्र, उत्तर प्रदेश, लखनऊ के निदेशक (प्राविधिक) डी. के. सिंह ने जानकारी दी है कि शिल्प अनुदेशक प्रशिक्षण योजना (CITS) सत्र-2025-26 के अंतर्गत संचालित पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की अंतिम तिथि अब 4 जून 2025 कर दी गई है। पूर्व में यह तिथि 28 मई निर्धारित की गई थी।निदेशक के अनुसार, देशभर के विभिन्न केंद्रों पर आयोजित की जाने वाली कंप्यूटर आधारित परीक्षा (CBT) में सम्मिलित होने के लिए इच्छुक अभ्यर्थी निर्धारित पोर्टल www.nimionlineadmission.in के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। आवेदन की पात्रता में B.Tech, पॉलिटेक्निक और ITI उत्तीर्ण अभ्यर्थियों के अतिरिक्त वे विद्यार्थी भी शामिल हैं, जो अंतिम वर्ष की परीक्षा में सम्मिलित हो रहे

महिलाओं को स्वावलंबन की राह दिखा रहीं प्रेरणा कैंटीन, प्रदेशभर में 1876 स्थानों पर संचालित

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य के निर्देश पर राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत गठित स्वयं सहायता समूहों, संकुल स्तरीय संगठनों और ग्राम स्तरीय संगठनों से जुड़ी महिलाओं को स्वावलंबी और आत्मनिर्भर बनाने के लिए सरकार द्वारा निरंतर प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं। इसी क्रम में प्रदेश के विभिन्न सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों और अन्य सार्वजनिक स्थलों पर स्वयं सहायता समूहों की महिलाओं द्वारा 'प्रेरणा कैंटीन' की शुरुआत की गई है।इन प्रेरणा कैंटीनों के माध्यम से एक ओर जहां समूहों की महिलाएं अपनी आमदनी बढ़ाकर परिवार के आर्थिक, सामाजिक और शैक्षिक जीवन को संवार रही हैं, वहीं दूसरी ओर मरीजों और तीमारदारों को ताजा व पौष्टिक भोजन सुलभ दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है। इन कैंटीनों की सफलता को देखते हुए उपमुख्यमंत्री ने सुझाव दिया है कि इनमें मोटे अनाज से बने व्यंजन भी शामिल किए जाएं, जिससे पोषण स्तर और बेहतर हो सके।राज्य ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत इन कैंटीनों के संचालन के लिए सामुदायिक निवेश निधि, ग्राम संगठन आजीविका निधि अथवा सीसीएल (Cash Credit Limit) का उपयोग करते हुए उपयुक्त स्थानों का चयन किया गया है। इससे यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि कैंटीन संचालन के लिए जरूरी संसाधन समय से उपलब्ध हों और महिलाओं को कार्य आरंभ करने में कोई कठिनाई न हो।प्रेरणा कैंटीन योजना न सिर्फ महिलाओं को रोजगार के अवसर प्रदान कर रही है, बल्कि प्रदेश सरकार के "स्वस्थ प्रदेश-खुशहाल प्रदेश" के संकल्प को भी मजबूती दे रही है। इस योजना से जुड़ी महिलाएं अब सिर्फ घरेलू जिम्मेदारियों तक सीमित नहीं, बल्कि आय अर्जित कर समाज में आत्मनिर्भरता की मिसाल बन रही हैं।वर्तमान में प्रदेश के 1876 स्थानों पर प्रेरणा कैंटीनें संचालित हैं, जिनमें से 832 कैंटीन सामुदायिक और प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों पर चल रही हैं। इन स्थानों पर मरीजों और उनके साथ आने वाले तीमारदारों को गरमागरम, ताजगी से भरपूर और स्वास्थ्यवर्धक भोजन मिल रहा है। महिलाओं के हाथों से बना यह भोजन न केवल गुणवत्तापूर्ण है, बल्कि इससे रोगियों की सेहत में भी सुधार देखा जा रहा है।उपमुख्यमंत्री मौर्य ने दोहराया कि राज्य सरकार महिलाओं के शैक्षिक, सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है। प्रेरणा कैंटीन इसका सशक्त उदाहरण हैं, जहां महिलाएं आत्मनिर्भरता की ओर कदम बढ़ा रही हैं और एक स्वस्थ समाज के निर्माण में सहभागी बन रही हैं।

क्या बांग्लादेश के सेना प्रमुख जनरल वकार उल जमा को भी सत्ता का खून लग गया है ? मोहम्मद यूनिस सरकार से ठनी

बंगाल देश की मोहम्मद यूनिस सरकार खतरे में है क्योंकि सेना प्रमुख जनरल वकार उल जमा ने कहा है कि यूनिस सरकार अनैतिक है और इसे 2025 के अंत तक चुनाव करवाया देना चाहिए। उल्लेखनीय है कि अगस्त 2024 में शेख हसीना सरकार का बंगला देश के कट्टर पंथी जमायत इस्लामी ने तख्ता पलटकर मोहम्मद यूनिस को सलाहकार बनाया था।

दरअसल जमायत इस्लामी ने शेख हसीना को सेना के माध्यम से हटाया और देश से भागने पर मजबूर कर दिया था। उन्हें भारत में शरण लेने पड़ी थी। बंगला देश में सत्ता को लेकर खून खराबा नया नहीं है। बंगला देश के प्रथम राष्ट्रपति और देश के निर्माता शेख मुजीब उर रहमान की भी एक कट्टर पंथी सेना अधिकारियों ने चटगांव में गोलियां मार कर हत्या कर दी थी।वे निवर्तमान प्रधानमंत्री शेख हसीना के पिता थे ।1971 में मुक्तिबाहनी के माध्यम से पूर्वी पाकिस्तान में युद्ध के बाद बंगला देश अस्तित्व में आया था।

भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री स्व श्रीमती इंदिरा ने बंगला देश के गठन में उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी।। भारत पाकिस्तान युद्ध का भी यही कारण था। शेख मुजीब उर रहमान के बाद सत्ता में आए जनरल जिया उर रहमान की भी हत्या कर दी गई।

बांग्लादेश दो राजनीतिक दल हैं एक है आवामी लीग और दूसरी है बीएनपी उसकी मुखिया है जिया उर रहमान की बेवा खालिद जिया दोनों बारी बारी से शासन किया करती थीं मगर इस बार जमायत इस्लामी संगठन ने हसीना का तख्ता पलटकर मोहम्मद यूनिस को सलाहकार बनाया है।अभी बाला बाला नौ महीने बीते है ।सेना प्रमुख जनरल वकार उल जमा के मोहम्मद यूनिस के साथ सम्बन्धों में तल्खी आ गई है बताया जाता है कि मोहम्मद यूनिस सेना प्रमुख जनरल वकार उल जमा हो हटाना चाहते हैं क्योंकि उनकी नियुक्ति पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना ने की थी और खुफिया जानकारी मिल रहीं हैं कि जनरल वकार उल जमा अभी भी भारत में बैठी शेख हसीना से संपर्क में हैं।

लेकिन मोहम्मद यूनिस अभी सरकार के सलाहकार हैं वे जनता से चुनकर नहीं आए हैं और इसलिए जनरल वकार उल जमा उन पर हावी हैं। बंगला देश में पहले से ही सेना को सत्ता का खून लगा हुआ है। बंगला देश की चारों ओर से सीमा भारत से लगी है भारत के असम नागालैंड त्रिपुरा मणिपुर मेघालय और पश्चिमी बंगाल की चार हजार किलोमीटर की सीमा है।

बंगला देश में व्यापार भी भारत के लोग करते हैं। और जमायत इस्लामी संगठन भारत के खिलाफ आग उगलता है इस कारण मोहम्मद यूनिस सरकार भी भारत के खिलाफ है।

सेना प्रमुख जनरल वकार उल जमा को भारत समर्थक माना जाता है। उन्होंने ही शेख हसीना को सुरक्षित रखने में मदद की बल्कि भागने के लिए सेना का हवाई जहाज उपलब्ध कराया। भारत भी चाहेगा कि मोहम्मद यूनिस सरकार गफलत आ जाय। कुल मिलाकर यह तय कि मोहम्मद यूनिस सरकार काम काज नहीं कर पा रही है ऐसा हम नहीं कह रहे बल्कि मोहम्मद यूनिस ने स्वयं कहा कि जब वे काम नहीं कर सकते तो इस्तीफा देना उचित होगा। मोहम्मद यूनिस ने त्यागपत्र की पेशकश की थी। लेकिन जमायत इस्लामी संगठन ने मना कर दिया। दूसरी ओर जीडीपी लगातार गिर रही है। बांग्लादेश का आवाम भी नौ महीने में जमायत इस्लामी संगठन की चाल समझने लगा है। बताया जाता है कि बंगला देश का कपड़ा, पटसन उद्योग को नुकसान हुआ है। भारत सरकार ने बांग्लादेश पर कुछ प्रतिबंध लगाए हैं क्योंकि उसे हिंदुओं पर हो रहे अत्याचार की चिंता है।हिंदुओं के संत और इस्कॉन मंदिर के महंत चिन्मय दास कृष्ण को भी अगस्त 2024 गिरफ्तार किया गया था लेकिन अभी तक जमानत नहीं हुई है। भारत इससे बेहद नाराज हैं।

हिंदी पत्रकारिता के 200 साल(30 मई हिंदी पत्रकारिता दिवस) पर विशेष

मूल्यबोध और राष्ट्रहित बने मीडिया का आधार

प्रो. (डा.) संजय द्विवेदी

एक समय में मीडिया के मूल्य थे सेवा, संयम और राष्ट्र कल्याण। आज व्यावसायिक सफलता और चर्चा में बने रहना ही सबसे बड़े मूल्य हैं।

हिंदी पत्रकारिता दिवस हम 30 मई को मनाते हैं। इसी दिन 1826 को कोलकाता से पं.युगुल किशोर शुक्ल ने हिंदी भाषा के पहले पत्र 'उदंत मार्तण्ड' की शुरुआत की थी। यह संयोग था या सुविचारित योजना कि उस दिन भारतीय तिथि से नारद जयंती भी थी। यानि हिंदी के पहले संपादक ने भी नारद जी अपने पुरखों के रुप में देखा। संपादकीय में उन्होंने हमें पत्रकारिता का उद्देश्य और बीज मंत्र भी यह लिखकर दिया- हिंदुस्तानियों के हित के हेत'। इस नजरिए से मूल्यबोध और राष्ट्रहित हमारी मीडिया का आधार रहा है।

इन 200 सालों की यात्रा में हमने बहुत कुछ अर्जित किया है। आज भी मीडिया की दुनिया में आदर्शों और मूल्यों का विमर्श चरम पर है। विमर्शकारों की दुनिया दो हिस्सों में बंट गयी है। एक वर्ग मीडिया को कोसने में सारी हदें पार कर दे रहा है तो दूसरा वर्ग मानता है जो हो रहा वह बहुत स्वाभाविक है तथा काल-परिस्थिति के अनुसार ही है। उदारीकरण और भूमंडलीकृत दुनिया में भारतीय मीडिया और समाज के पारंपरिक मूल्यों का बहुत महत्त्व नहीं है।

एक समय में मीडिया के मूल्य थे सेवा, संयम और राष्ट्र कल्याण। आज व्यावसायिक सफलता और चर्चा में बने रहना ही सबसे बड़े मूल्य हैं। कभी हमारे आदर्श महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, विष्णुराव पराड़कर, माखनलाल चतुर्वेदी और गणेशशंकर विद्यार्थी थे, ताजा स्थितियों में वे रुपर्ट मर्डोक और जुकरबर्ग हों? सिद्धांत भी बदल गए हैं। ऐसे में मीडिया को पारंपरिक चश्मे से देखने वाले लोग हैरत में हैं। इस अंधेरे में भी कुछ लोग मशाल थामे खड़े हैं, जिनके नामों का जिक्र अकसर होता है, किंतु यह नितांत व्यक्तिगत मामला माना जा रहा है। यह मान लिया गया है कि ऐसे लोग अपनी बैचेनियों या वैचारिक आधार के नाते इस तरह से हैं और उनकी मुख्यधारा के मीडिया में जगह सीमित है। तो क्या मीडिया ने अपने नैसर्गिक मूल्यों से भी शीर्षासन कर लिया है, यह बड़ा सवाल है।

सच तो यह है भूमंडलीकरण और उदारीकरण इन दो शब्दों ने भारतीय समाज और मीडिया दोनों को प्रभावित किया है। 1991 के बाद सिर्फ मीडिया ही नहीं पूरा समाज बदला है, उसके मूल्य, सिद्धांत, जीवनशैली में क्रांतिकारी परिवर्तन परिलक्षित हुए हैं। एक ऐसी दुनिया बन गयी है या बना दी गई है जिसके बारे में काफी कुछ कहा जा चुका है। आज भूमंडलीकरण को लागू हुए चार दशक होने जा रहे हैं। उस समय के प्रधानमंत्री श्री पीवी नरसिंह राव और तत्कालीन वित्तमंत्री श्री मनमोहन सिंह ने इसकी शुरुआत की तबसे हर सरकार ने कमोबेश इन्हीं मूल्यों को पोषित किया। एक समय तो ऐसा भी आया जब श्री अटलबिहारी वाजपेयी के प्रधानमंत्रित्व काल में जब उदारीकरण का दूसरा दौर शुरू हुआ तो स्वयं नरसिंह राव जी ने टिप्पणी की "हमने तो खिड़कियां खोली थीं, आपने तो दरवाजे भी उखाड़ दिए।" यानी उदारीकरण-भूमंडलीकरण या मुक्त बाजार व्यवस्था को लेकर हमारे समाज में हिचकिचाहटें हर तरफ थी। एक तरफ वामपंथी, समाजवादी, पारंपरिक गांधीवादी इसके विरुद्ध लिख और बोल रहे थे, तो राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ भी अपने भारतीय मजूदर संघ एवं स्वदेशी जागरण मंच जैसे संगठनों के माध्यम से इस पूरी प्रक्रिया को प्रश्नांकित कर रहा था। यह साधारण नहीं था कि संघ विचारक दत्तोपंत ठेंगड़ी ने वाजपेयी सरकार के वित्त मंत्री यशवंत सिन्हा को 'अनर्थ मंत्री' कहकर संबोधित किया। खैर ये बातें अब मायने नहीं रखतीं। 1991 से 2025 तक गंगा में बहुत पानी बह चुका है और सरकारें, समाज व मीडिया तीनों 'मुक्त बाजार' के साथ रहना सीख गए हैं। यानी पीछे लौटने का रास्ता बंद है। बावजूद इसके यह बहस अपनी जगह कायम है कि हमारे मीडिया को ज्यादा सरोकारी, ज्यादा जनधर्मी, ज्यादा मानवीय और ज्यादा संवेदनशील कैसे बनाया जाए। व्यवसाय की नैतिकता को किस तरह से सिद्धांतों और आदर्शों के साथ जोड़ा जा सके। यह साधारण नहीं है कि अनेक संगठन आज भी मूल्य आधारित मीडिया की बहस से जुड़े हुए हैं।

इस सारे समय में पठनीयता का संकट, सोशल मीडिया का बढ़ता असर, मीडिया के कंटेट में तेजी से आ रहे बदलाव, निजी नैतिकता और व्यावसायिक नैतिकता के सवाल, मोबाइल संस्कृति से उपजी चुनौतियों के बीच मूल्यों की बहस को देखा जाना चाहिए। इस समूचे परिवेश में आदर्श, मूल्य और सिद्धांतों की बातचीत भी बेमानी लगने लगी है। बावजूद इसके एक सुंदर दुनिया का सपना, एक बेहतर दुनिया का सपना देखने वाले लोग हमेशा एक स्वस्थ और सरोकारी मीडिया की बहस के साथ खड़े रहेंगे। संवेदना, मानवीयता और प्रकृति का साथ ही किसी भी संवाद माध्यम को सार्थक बनाता है। संवेदना और सरोकार समाज जीवन के हर क्षेत्र में आवश्यक है, तो मीडिया उससे अछूता कैसे रह सकता है।

सही मायने में यह समय गहरी सांस्कृतिक निरक्षता और संवेदनहीनता का समय है। इसमें सबके बीच मीडिया भी गहरे असमंजस में है। लोक के साथ साहचर्य और समाज में कम होते संवाद ने उसे भ्रमित किया है। चमकती स्क्रीनों, रंगीन अखबारों और स्मार्ट हो चुके मोबाइल उसके मानस और कृतित्व को बदलने में अहम भूमिका निभा रहे हैं। ऐसे में मूल्यों की बात कई बार नक्कारखाने में तूती की तरह लगती है। किंतु जब मीडिया के विमर्शकार,संचालक यह सोचने बैठेंगे कि मीडिया किसके लिए और क्यों- तब उन्हें इसी समाज के पास आना होगा। रूचि परिष्कार, मत निर्माण की अपनी भूमिका को पुनर्परिभाषित करना होगा। क्योंकि तभी मीडिया की सार्थकता है और तभी उसका मूल्य है । लाख मीडिया क्रांति के बाद भी 'भरोसा' वह शब्द है जो आसानी से अर्जित नहीं होता। लाखों का प्रसार आपके प्राणवान और सच के साथ होने की गारंटी नहीं है। 'विचारों के अनुकूलून' के समय में भी लोग सच को पकड़ लेते हैं। मीडिया का काम सूचनाओं का सत्यान्वेषण ही है, वरना वे सिर्फ सूचनाएं होंगी-खबर या समाचार नहीं बन पाएंगी। कोई भी मीडिया सत्यान्वेषण की अपनी भूख से ही सार्थक बनता है, लोक में आदर का पात्र बनता है। हमें अपने मीडिया को मूल्यों, सिद्धांतों और आदर्शों के साथ खड़ा करना होगा, यह शब्द आज की दुनिया में बोझ भले लगते हों पर किसी भी संवाद माध्यम को सार्थकता देने वाले शब्द यही हैं। सच की खोज कठिन है पर रुकी नहीं है। सच से साथ खड़े रहना कभी आसान नहीं था। हर समय अपने नायक खोज ही लेता है। इस कठिन समय में भी कुछ चमकते चेहरे हमें इसलिए दिखते हैं क्योंकि वे मूल्यों के साथ, आदर्शों की दिखाई राह पर अपने सिद्धांतों के साथ डटे हैं। समय ऐसे ही नायकों को इतिहास में दर्ज करता है और उन्हें ही मान देता है। आइए भारतीय मीडिया के पारंपरिक अधिष्ठान पर खड़े होकर हम अपने वर्तमान को सार्थक बनाएं।

(लेखक माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय, भोपाल में जनसंचार विभाग के आचार्य एवं अध्यक्ष हैं।)

अजब-गजब

इसे बच्चा समझने की भूल मत करना, ढाई साल की उम्र में किया ये कारनामा

यूं तो बच्चों को पहला शब्द सीखने में काफी समय लग जाता है, लेकिन कुछ बच्चे बहुत जल्द बोलना भी शुरू कर देते हैं। यूनाइटेड किंगडम के जोसेफ हैरिस बिर्टिल (Joseph Harris-Birtill) ऐसे ही बच्चों में से एक हैं, जिन्होंने महज सात महीने की उम्र में ही अपना पहला शब्द बोला था। लेकिन तब जोसेफ के माता-पिता को जरा भी अंदाजा नहीं था कि उनका बेटा आगे चलकर दुनिया भर में उनका नाम रोशन करेगा। महज 2 साल की उम्र का यह बच्चा मेन्सा का सबसे छोटा मेंबर बन गया है।

बता दें कि मेन्सा दुनिया की सबसे बड़ी और सबसे पुरानी हाई IQ वाले लोगों की एक प्रतिष्ठित सोसायटी है। इसका मेंबर बनने के लिए आपका आईक्यू लेवल कम से कम 132 होना चाहिए। बीते शुक्रवार को मेन्सा ने अपने सबसे युवा मेंबर जोसेफ का वेलकम किया, जिनकी उम्र अभी सिर्फ 2 साल और 186 दिन है। हालांकि, जोसेफ के आईक्यू का अभी खुलासा नहीं किया गया है, लेकिन कहा जाता है कि उसकी एक्टिविटीज और शार्प माइंड का कोई जवाब नहीं है।

जोसेफ की मां डॉ। रोज और पिता डेविड हैरिस बिर्टिल का कहना है कि उन्हें कुछ ही महीनों में समझ आ गया था कि उनका बच्चा सबसे अलग है। उन्होंने बताया कि जब वे सिर्फ 5 हफ्ते का था, तब पहली बार खुद से करवट बदली थी। वहीं, सात महीने में पहला शब्द बोला था। यही नहीं, महज एक साल की उम्र में एक पूरी किताब पढ़ ली। ढाई साल की उम्र में वह बोल-बोलकर पढ़ने लगा था। इसके अलावा 5 अलग-अलग भाषाओं में 10 तक की गिनती, और 100 तक की गिनती भी आती है।

बच्चे की मां रोज ने बताया कि जोसेफ अभी मोर्स कोड सीख रहा है। पीरियोडिक टेबल में रुचि होने के अलावा उसे ग्रीक वर्णमाला भी आती है। यही नहीं, उसे नई भाषा सीखना, मैथ्स के प्रॉब्लम्स सॉल्व करना, कागज के हवाई जहाज उड़ाना बहुत पसंद है।

जब जोसेफ की मां को लगा कि उनके बेटे ने बहुत कम उम्र में ही पढ़ाई शुरू कर दी है, तो उन्होंने मेन्सा से संपर्क किया। इसी के बाद जोसेफ को सबसे कम उम्र का मेंबर बनाने का फैसला किया गया। फिलहाल, वह पियानो बजाना सीख रहा है।

ब्लॉग

'देशहित' से ही बचेगी पत्रकारिता की साख

लोकेन्द्र सिंह राजपूत

'हिंदुस्थानियों के हित के हेत' इस उद्देश्य के साथ 30 मई, 1826 को भारत में हिंदी पत्रकारिता की नींव रखी जाती है। पत्रकारिता के अधिष्ठाता देवर्षि नारद के जयंती प्रसंग (वैशाख कृष्ण पक्ष द्वितीया) पर हिंदी के पहले समाचार-पत्र 'उदंत मार्तंड' का प्रकाशन होता है। इस सुअवसर पर हिंदी पत्रकारिता का सूत्रपात होने पर संपादक पंडित युगलकिशोर समाचार-पत्र के पहले ही पृष्ठ पर अपनी प्रसन्नता प्रकट करते हुए उदंत मार्तंड का उद्देश्य स्पष्ट करते हैं। आज की तरह लाभ कमाना उस समय की पत्रकारिता का उद्देश्य नहीं था। भारत की स्वतंत्रता से पूर्व प्रकाशित ज्यादातर समाचार-पत्र आजादी के आंदोलन के माध्यम बने। अंग्रेज सरकार के विरुद्ध मुखर रहे। यही रुख उदंत मार्तंड ने अपनाया। अत्यंत कठिनाईयों के बाद भी पंडित युगलकिशोर उदंत मार्तंड का प्रकाशन करते रहे। किंतु, यह संघर्ष लंबा नहीं चला। हिंदी पत्रकारिता के इस बीज की आयु 79 अंक और लगभग डेढ़ वर्ष रही। इस बीज की जीवटता से प्रेरणा लेकर बाद में हिंदी के अन्य समाचार-पत्र प्रारंभ हुए। आज भारत में हिंदी के समाचार-पत्र सबसे अधिक पढ़े जा रहे हैं। प्रसार संख्या की दृष्टि से शीर्ष पर हिंदी के समाचार-पत्र ही हैं। किंतु, आज हिंदी पत्रकारिता में वह बात नहीं रह गई, जो उदंत मार्तंड में थी। संघर्ष और साहस की कमी कहीं न कहीं दिखाई देती है। दरअसल, उदंत मार्तंड के घोषित उद्देश्य 'हिंदुस्थानियों के हित के हेत' का अभाव आज की हिंदी पत्रकारिता में दिखाई दे रहा है। हालाँकि, यह भाव पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है, लेकिन बाजार के बोझ तले दब गया है। व्यक्तिगत तौर पर मैं मानता हूँ कि जब तक अंश मात्र भी 'देशहित' पत्रकारिता की प्राथमिकता में है, तब तक ही पत्रकारिता जीवित है। आवश्यकता है कि प्राथमिकता में यह भाव पुष्ट हो, उसकी मात्रा बढ़े। समय आ गया है कि एक बार हम अपनी पत्रकारीय यात्रा का सिंहावलोकन करें। अपनी पत्रकारिता की प्राथमिकताओं को जरा टटोलें। समय के थपेडों के साथ आई विषंगतियों को दूर करें। समाचार-पत्रों या कहें पूरी पत्रकारिता को अपना अस्तित्व बचाना है, तब उदंत मार्तंड के उद्देश्य को आज फिर से अपनाना होगा। अन्यथा सूचना के डिजिटल माध्यम बढ़ने से समूची पत्रकारिता पर अप्रासंगिक होने का खतरा मंडरा ही रहा है।

असल में आज की पत्रकारिता के समक्ष अनेक प्रकार की चुनौतियां मुंहबांए खड़ी हैं। यह चुनौतियां पत्रकारिता के मूल सिद्धांतों से डिगने के कारण उत्पन्न हुई हैं। पूर्वजों ने जो सिद्धांत और मूल्य स्थापित किए थे, उनको साथ लेकर पत्रकारिता मिशन से प्रोफेशन की ओर जाती, तब संभवतः कम समस्याएं आतीं। क्योंकि मूल्यों और सिद्धांतों की उपस्थिति में प्रत्येक व्यवसाय में मर्यादा और नैतिकता का ख्याल रखा जाता है। किंतु, जैसे ही हम तय सिद्धांतों से हटते हैं, मर्यादा को लांघते हैं, तब स्वाभाविक तौर पर चुनौतियां सामने आने लगती हैं। नैतिकता के प्रश्न भी खड़े होने लगते हैं। यही आज मीडिया के साथ हो रहा है। मीडिया के समक्ष अनेक प्रश्न खड़े हैं। स्वामित्व का प्रश्न। भ्रष्टाचार का प्रश्न। मीडिया संस्थानों में काम करने वाले पत्रकारों के शोषण, स्वाभिमान और स्वतंत्रता के प्रश्न हैं। वैचारिक पक्षधरता के प्रश्न हैं। 'भारतीय भाव' को तिरोहित करने का प्रश्न। इन प्रश्नों के कारण उत्पन्न हुआ सबसे बड़ा प्रश्न- विश्वसनीयता का है।

यह सब प्रश्न उत्पन्न हुए हैं पूँजीवाद और कम्युनिज्म के उदर से। सामान्य-सा फलसफा है कि बड़े लाभ के लिए बड़ी पूँजी का निवेश किया जाता है। आज अखबार और न्यूज चैनल का संचालन कितना महंगा है, हम सब जानते हैं। अर्थात् मौजूदा दौर में मीडिया पूँजी का खेल हो गया है। एक समय में पत्रकारिता के व्यवसाय में पैसा 'बाय प्रोडक्ट' था। लेकिन, उदारीकरण के बाद बड़ा बदलाव मीडिया में आया है। 'बाय प्रोडक्ट' को प्रमुख मान कर अधिक से अधिक धन उत्पन्न करने के लिए धन्नासेठों ने समाचारों का ही व्यवसायीकरण कर दिया है। यही कारण है कि मीडिया में कभी जो छुट-पुट भ्रष्टाचार था, अब उसने संस्थागत रूप ले लिया है। वहीं, कम्युनिस्टों ने अपनी विचारधारा के प्रसार और भारतीयता को कमजोर करने के लिए पत्रकारिता को एक साधन के रूप में अपनाया। आज भी मीडिया में कम्युनिस्टों की पकड़ साफ दिखायी देती है। इसलिए वे जब चाहते हैं, भारत विरोधी विमर्श खड़े कर देते हैं। इस्लामिक आक्रामकता पर पर्दा डालने और हिन्दुओं को सांप्रदायिक सिद्ध करने में कम्युनिस्ट पत्रकारों ने ऐड़ी-चोटी का जोर लगाया है। अभी हाल ही में भोपाल में 'लव जिहाद' का बड़ा मामला सामने आया, जिसमें आरोपी मुस्लिम लड़के भी स्वीकार कर रहे हैं कि हिन्दू लड़कियों को धोखे स फंसाना और उनका यौन शोषण करना, उनके लिए सवाब का काम है। जब हिन्दी के प्रमुख समाचारपत्रों ने मुस्लिम लड़कों की इस स्वीकारोक्ति को प्रकाशित किया, तब कम्युनिस्ट माइंडसेट के मीडियाकर्मियों को बहुत बुरा लगा। उन्होंने अपने संस्थानों के डिजिटल एवं प्रिंट संस्थानों में इसके खिलाफ लिखना शुरू कर दिया। मतलब सच सामने नहीं आना चाहिए। भले ही हिन्दू लड़कियां मजहबी दरिंदों का शिकार होती रहें। पता नहीं उन्हें सच्ची बात लिखना, सांप्रदायिकता और मुस्लिम विरोध क्यों लगता है? इस्लामिक अपराध पर पर्दा डालने के लिए इसी प्रकार के कम्युनिस्ट एक से बढ़कर एक चालाकियां दिखाते हैं। जब कोई मौलवी दुष्कर्म या किसी आपराधिक कृत्य में पकड़ा जाता है, तब ये उसके लिए मौलवी या औलिया नहीं अपितु साधु या बाबा शब्द का उपयोग करते हैं। लोगों को इसी प्रकार भ्रमित करने की पत्रकारिता कम्युनिस्टों ने की है। हिन्दुओं की मॉब लिंचिंग के समाचार को सिंगल कॉलम में कहीं छिपा दिया जाता है, जबकि मुस्लिम व्यक्ति की मॉब लिंचिंग पर भारत से लेकर अमेरिका तक के समाचारपत्रों के प्रथम पृष्ठ से लेकर संपादकीय पृष्ठ तक रच दिए जाते हैं। यह दोहरा आचरण ही दोनों समुदायों के बीच नफरत फैलाता है।

ऐसे ही कुछ तथाकथित विद्वानों ने यह भ्रम भी पैदा कर दिया है कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता की भूमिका विपक्ष की है। जिस प्रकार विपक्ष ने हंगामा करने और प्रश्न उछालकर भाग खड़े होने को ही अपना कर्तव्य समझ लिया है, ठीक उसी प्रकार कुछ पत्रकारों ने भी सनसनी पैदा करना ही पत्रकारिता का धर्म समझ लिया है। लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ की विराट भूमिका से हटाकर न जाने क्यों पत्रकारिता को हंगामाखेज विपक्ष बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है? यह अवश्य है कि लोकतंत्र में संतुलन बनाए रखने के लिए चारों स्तम्भों को परस्पर एक-दूसरे की निगरानी करनी है। पत्रकारिता को भी सत्ता के कामकाज की समीक्षा करनी है और उसको आईना दिखाना है। हम पत्रकारिता की इस भूमिका को देखते हैं, तब हमें वह हंगामाखेज नहीं अपितु समाधानमूलक दिखाई देती है। भारतीय दृष्टिकोण से जब हम संचार की परंपरा को देखते हैं, तब प्रत्येक कालखंड में संचार का प्रत्येक स्वरूप लोकहितकारी दिखाई देता है। संचार का उद्देश्य समस्याओं का समाधान देना रहा है।

पत्रकारिता का केवल एक ही पक्ष होना चाहिए- देशहित। कलम का जनता के पक्ष और देशहित में चलना ही उसकी सार्थकता है। पत्रकारिता में हमें जरूर ध्यान रखना चाहिए कि हमारे शब्दों एवं प्रश्नों से राष्ट्र की प्रतिष्ठा पर आँच न आए। हमारी कलम से निकल बहने वाली पत्रकारिता की धारा भारतीय स्वाभिमान, सम्मान और सुरक्षा के विरुद्ध न हो। कहने का अभिप्राय इतना-सा है कि हमारी पत्रकारिता में 'राष्ट्र सबसे पहले' का भाव जागृत होना चाहिए। वर्तमान पत्रकारिता में इस भाव की अनुपस्थिति दिखाई दे रही है। यदि पत्रकारिता में 'राष्ट्र सबसे पहले' का भाव जाग गया तब पत्रकारिता के समक्ष आकर खड़ी हो गईं ज्यादातर चुनौतियां स्वतः ही समाप्त हो जाएंगी। हिंदी के पहले समाचार पत्र उदंत मार्तंड का जो ध्येय वाक्य था- 'हिंदुस्थानियों के हित के हेत'। अर्थात् देशवासियों का हित-साधन। यही तो 'राष्ट्र सबसे पहले' का भाव है। समाज के सामान्य व्यक्ति के हित की चिंता करना। उसको न्याय दिलाना। उसकी बुनियादी समस्याओं को हल करने में सहयोगी होना। न्यायपूर्ण बात कहना।

बरेली का अमीन अरेस्ट, पुलिस चौकी से 200 दूर घर में चला रहा था देह व्यापार का धंधा, कैसे खुली पोल?

आर्यावर्त संवाददाता

बरेली। यूपी के बरेली जिले के इज्जतनगर थाना क्षेत्र में चल रहे देह व्यापार के मामले में एक और बड़ी कार्रवाई हुई है। इस केस में फरार चल रहे मकान मालिक अमीन को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। अमीन वही व्यक्ति है, जिसके मकान में यह रैकेट चलाया जा रहा था। गिरफ्तारी के बाद उसे कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया। पुलिस जांच में यह साफ हो गया है कि अमीन को पता था कि उसके मकान में सेक्स रैकेट चल रहा है।

इसके बावजूद उसने न तो किराएदारों को निकाला और न ही पुलिस को कोई जानकारी दी। इससे साफ है कि अमीन भी इस गंदे धंधे में कहीं न कहीं शामिल था या उसने उसे रोकने की कोशिश नहीं की। जब

पुलिस जांच में अमीन का नाम सामने आया तो उसे इसकी भनक लग गई और वह फरार हो गया। इसके बाद एसओजी और इज्जतनगर पुलिस की टीम लगातार उसकी तलाश में जुट गई। आखिरकार पुलिस ने उसे मेगा ड्रीम्स के पास से पकड़ा। पूछताछ के बाद उसे जेल भेज दिया गया।

पुलिस चौकी से सिर्फ 200 दूर चल रहा था रैकेट

जिस मकान में यह रैकेट चल रहा था, वो कर्मचारी नगर पुलिस चौकी से सिर्फ 200 मीटर की दूरी पर है। इसके बावजूद पुलिस को कई दिनों तक इसकी जानकारी नहीं लगी। अब इस मामले में चौकी के पुलिसकर्मियों की भूमिका भी शक के घेरे में है। सीओ तृतीय पंकज श्रीवास्तव ने कहा कि अगर कोई भी पुलिसकर्मी दोषी पाया गया तो उस पर भी कार्रवाई होगी। इस रैकेट में पहले भी बड़ी कार्रवाई हो चुकी है। पुलिस ने छापेमारी के दौरान छह महिलाओं समेत आठ लोगों को रंगे हाथों पकड़ा था। उस समय मकान में दो पुरुष और कई महिलाएं आपत्तिजनक हालत में मिले थे।

संभव होटल में भी पुलिस ने मारा था छापा

जांच में सामने आया कि मकान किराए पर लेने वाली महिला रवीना इस रैकेट की सरगना थी। वह बाहर से लड़कियां बुलाकर उन्हें सौदे के लिए तैयार करती थी। इज्जतनगर पुलिस ने संजय नगर स्थित संभव होटल में भी छापा मारा था। यहां से सात महिलाओं समेत 10 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। इनमें कुछ महिलाएं पश्चिम बंगाल, झारखंड, राजस्थान और लखनऊ से आई थीं। होटल से 82,500 रुपये की नकदी और अश्लील सामग्री भी बरामद हुई थी। इस केस में होटल की मालकिन ज्योति पटेल अभी तक पुलिस की पकड़ से बाहर है। वह मेघा सिटी की रहने वाली बताई जा रही है। पुलिस उसकी तलाश में लगातार दबिश दे रही है और दावा कर रही है कि उसे जल्द ही पकड़ लिया जाएगा।

अब तक कई आरोपी किए जा चुके गिरफ्तार

सीओ तृतीय ने बताया कि अमीन से लंबी पूछताछ के बाद उसे जेल भेजा गया है। इसके साथ ही संबंधित विभाग को भी पत्र भेजा गया है, ताकि उसके खिलाफ विभागीय कार्रवाई शुरू की जा सके। पुलिस का कहना है कि केस से जुड़े बाकी आरोपियों को भी जल्द गिरफ्तार किया जाएगा। बता दें कि बरेली के इस सेक्स रैकेट मामले में पुलिस की कार्रवाई लगातार जारी है। अब तक कई आरोपी गिरफ्तार किए जा चुके हैं और बाकी की तलाश चल रही है। इस केस ने कई चौंकाने वाले राज खोले हैं, जिससे पुलिस और प्रशासन दोनों सतर्क हो गए हैं।

ऑफिस में मृत मिले सिंचाई विभाग के ठेकेदार और चालक, मुंह से निकल रहा था झाग... ऐसे पड़े थे शव

आर्यावर्त संवाददाता

गजरौला/अमरोहा। गजरौला में सिंचाई विभाग के ठेकेदार देव ऋषि उर्फ दीपक जाटव (42)और उनके चालक इंद्रपाल सैनी (40) के शव उनके ऑफिस में मिले। ऑफिस नगर के अवंतिका नगर मोहल्ले में ललिता देवी मंदिर मार्ग किनारे है। दोनों के मुंह से झाग आ रहे थे। दीपक शुक्लपुरी मोहल्ले के रहने वाले जबकि इंद्रपाल चौबारा निवासी थे।

दोनों के शव सीएचसी में लाने के बाद पोस्टमार्टम के लिए भेजे गए। एएसपी और सीओ ने मौका मुआयना कर घटना की जानकारी ली। फोरेंसिक टीम ने मौके से सबूत एकत्र किए। शुक्लपुरी निवासी अतरपाल सिंह जाटव ज्ञान भारती इंटर कॉलेज के सेवानिवृत्त शिक्षक हैं। उनके बेटे देव ऋषि उर्फ दीपक सिंचाई विभाग के ठेकेदार थे।

उनका संभल, बहजोई समेत कई स्थानों पर ठेका चल रहा है। थाना क्षेत्र के गांव चौबारा निवासी किसान जबर सिंह सैनी के बेटे इंद्रपाल सैनी दीपक की कार चलाते थे। दीपक के भांजे विवेक बैंक कॉलोनी के रहने वाले हैं, उन्होंने बताया कि बुधवार रात उनके मामा को परिजनों ने कई बार फोन किया लेकिन उनका फोन नहीं उठा।

जिस पर परिजन बड़े चिंतित थे। बृहस्पतिवार सुबह उनकी मौसी हेमलता ने विशाल से अवंतिका नगर स्थित दीपक के ऑफिस में जाकर जानकारी करने व देखने के लिए कहा। हेमलता की शादी रामपुर में हुई है लेकिन इस इन दिनों पिता के शुक्लपुरी स्थित घर आई हुई हैं। उनके कहने पर सुबह छह बजे विवेक अपने मामा के ऑफिस में गए। यहां उनके मामा दीपक और उनका चालक इंद्रपाल मृत पड़े थे। दीपक के पैर बाथरूम में जबकि बाकी शरीर बाहर था। बराबर में ही इंद्रपाल का शव पड़ा था।

लखनऊ से गाजियाबाद तक... 24 घंटे में 14 एनकाउंटर, लॉरेंस का गुर्गा ढेर; कैसे UP के बदमाशों में मचा 'त्राहिमाम'?

आर्यावर्त संवाददाता

लखनऊ। उत्तर प्रदेश में अपराध और अपराधियों के खिलाफ एक बार फिर से पुलिस ने तेवर तीखे कर लिए हैं। बीते 24 घंटे में ही यूपी पुलिस ने ताबड़तोड़ 14 एनकाउंटर कर डाले। इसमें से लॉरेंस बिश्नोई गैंग के कुख्यात बदमाश को पुलिस ने मार गिराया है तो बाकी 13 मामलों में बदमाशों के पैर में गोली मारकर उन्हें दबोच लिया है। पुलिस की इस कार्रवाई से बदमाशों में दहशत की स्थिति है। आलम यह है कि करीब दर्जन भर बदमाशों ने खुद हाथ उठाकर पुलिस के सामने सरेंडर कर दिया है।

लॉरेंस गैंग के बदमाश नवीन का एनकाउंटर यूपी पुलिस की एसटीएफ और दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल ने जॉइंट एक्शन में किया है। नवीन लॉरेंस गैंग का शार्प शूटर था और उसके खिलाफ दिल्ली और यूपी में आधा दर्जन से अधिक मुकदमे लंबित थे। इसी बीच यूपी एसटीएफ को एक टिप मिली और फिर एसटीएफ ने दिल्ली पुलिस के साथ मिलकर हापुड़ के कोतवाली क्षेत्र में इस बदमाश को घेर लिया। इस दौरान नवीन ने पुलिस पार्टी पर गोली चलाई, लेकिन पहले से अलर्ट पुलिस टीम ने जवाबी कार्रवाई करते हुए उसे मार गिराया है।

तड़के राजधानी में गरजीं पुलिस की बंदूकें

गुरुवार को एनकाउंटर की शुरुआत यूपी पुलिस ने राजधानी लखनऊ से की। यहां 5 साल की मासूम बच्ची से रेप कर फरार चल रहे बदमाश कमल किशोर के बारे में पुलिस को टिप मिली थी; इस अधार पर पुलिस ने मदेयगंज थाना क्षेत्र में उसे घेरने की कोशिश की। इस दौरान यह बदमाश पुलिस पर फायरिंग करते हुए भागने लगा। ऐसे में पुलिस ने भी जवाबी फायरिंग करते हुए उसे दबोच लिया है। सीतापुर ज़िले के कमियापुर में रहने वाला यह बदमाश यहां बंधे के पास झुग्गियों में रहता है। उधर, गाजियाबाद पुलिस बदमाश ने भी आमने सामने की मुठभेड़ में कुख्यात लूटेरे को पकड़ा है।

गोली के डर से कांपे बदमाश

जालौन के बदमाशों में पुलिस का खौफ देखने को मिला। यहां पुलिस ने कोंच में नवीन ज्वेलर्स की दुकान पर डकैती डालने वाले 2 बदमाशों को घेर लिया था। पुलिस ने इन बदमाशों को सरेंडर करने के लिए कहा, लेकिन एक बदमाश गोलू उर्फ अजय कुशवाहा पुत्र राजेंद्र कुशवाहा ने पुलिस पर फायर कर दिया। ऐसे में पुलिस ने भी जवाबी कार्रवाई करते हुए अजय के पैर में गोली मार दी। उसे गोली लगते देखकर उसका साथी रामू कुशवाहा थर-थर कांपने लगा। उसने खुद ही हाथ उठाकर सरेंडर कर दिया।

इन जिलों में भी हुई पुलिस की ठांय-ठांय

यूपी पुलिस का एनकाउंटर वाला एक्शन कई अन्य जिलों में हुआ है। उन्नाव जिले में पुलिस ने बुधवार की देर रात एनकाउंटर में एक बदमाश को दबोच लिया, हालांकि दो अन्य बदमाश भागने में सफल रहे थे। इसी प्रकार बुलंदशहर में 6 वर्ष की नाबालिग बच्ची से रेप के आरोपी को खुर्जा देहात पुलिस ने मुठभेड़ के दौरान अरेस्ट किया है। बागपत पुलिस ने 2 चेन स्नेचरों का एनकाउंटर किया है। वहीं आगरा पुलिस ने बुधवार की ही रात एक बदमाश के पैर में गोली मारकर पकड़ लिया। उधर, झांसी में मोठ कोतवाली पुलिस ने 25 हजार रुपये के इनामी बदमाश का एनकाउंटर किया है। वहीं बलिया पुलिस ने भी एक घंटे के अंतराल में दो एनकाउंटर करते हुए दो बदमाशों को अरेस्ट किया है।

शामली और हापुड़ में पकड़े गए बदमाश

यूपी पुलिस की शामली यूनिट ने सहारनपुर भट्टा मुनीम से लूटपाट करने वाले बदमाशों को एनकाउंटर में धर दबोचा है। वहीं हापुड़ पुलिस ने एनकाउंटर के दौरान चार बदमाशों को पकड़ा है। इसमें से एक बदमाश के पैर में गोली है। जबकि दूसरे बदमाश ने गोली लगने के डर से खुद सरेंडर किया है। उधर, मुजफरनगर में पुलिस ने तीन बदमाशों के पैर में गोली मारकर उन्हें पकड़ लिया है। इसी क्रम में लखनऊ की आलमबाग पुलिस ने एक बदमाश को एनकाउंटर में अरेस्ट किया है।

जोंक से हुआ सोरायसिस का इलाज, साल भर नहीं खानी पड़ी दवा, बच्ची का पैर कटने से बचा

अलीगढ़। यूनानी चिकित्सा में प्रचलित जोंक थेरेपी वर्तमान में सोरायसिस (त्वचा संक्रमण) के उपचार में बेहद कारगर साबित हो रही है। अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के तिब्बिया कॉलेज में 50 मरीजों पर एक वर्ष तक शोध किया गया। इस दौरान मरीजों को संक्रमण से राहत मिली और दवा नहीं खानी पड़ी।

शोध करने वाले डॉ. नवालुर्रहमान ने बताया कि 18 से 55 साल की आयु के मरीजों पर शोध किया। यह सभी 50 मरीज पूरी तरह सही हो गए। अंग्रेजी दवाओं से इनको राहत नहीं मिल रही थी। इनमें कुछ को दो बार थेरेपी देनी पड़ी जबकि कुछ को उससे ज्यादा। डॉ. नवालुर्रहमान का कहना है कि सोरायसिस कई तरह के होते हैं। यह चकत्ते वाले, छोटे बूंद जैसे धब्बे वाले आदि दिखते हैं। यह बगल, कमर और स्तनों के नीचे की त्वचा की परत को प्रभावित करते हैं।

मां के बगल में सोई थी 5 माह की मासूम, चुपके से आए दादा-दादी, पोती का ब्लेड से रेत दिया गला, वजह क्या?

आर्यावर्त क्रांति ब्यूरो

सहारनपुर। उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में एक पांच की मासूम बच्ची की हत्या का खुलासा पुलिस ने कुछ ही घंटों के भीतर कर दिया। मामला सहारनपुर के गागलहेड़ी थाना इलाके के कुतुबपुर कुसैनी गांव का है। यहां बुधवार को एक मासूम बच्ची का ब्लेड से गला रेत डाला गया। मासूम अपनी मां के बगल में सोई थी। उसकी हत्या किसी और ने नहीं, बल्कि उसके दादा-दादी ने की। पुलिस ने इस हत्या के मामले में दादा-दादी और बुआ की गिरफ्तारी की है।

बताया जा रहा है कि सास - ससुर की बहू से अनबन चल रही थी। सास-ससुर ने बहू को फंसाने के लिए मासूम को मौत के घाट उतार दिया। मृतक की पहचान पांच माह की इशिका के रूप में हुई है। पुलिस ने बच्ची के शव का पोस्टमार्टम कराकर शव को परिवार वालों को

सौंप दिया है। दादा-दादी की इस करतूत ने हर किसी को हैरान कर दिया है। दरअसल, गागलहेड़ी थाना इलाके के कुतुबपुर कुसैनी गांव के रहने वाले राजन केरल में नौकरी करते हैं।

हत्या का मां को भी नहीं चला पता

राजन की पत्नी गांव में संयुक्त परिवार में रहती हैं। पत्नी मंगलवार रात को बेटी इशिका को बगल में लेकर सो रही थीं। बुधवार सुबह परिवार वालों ने देखा कि इशिका का गला रेत दिया गया है। हत्या को इतनी सफाई से अंजाम दिया गया कि इशिका की मां को भी पता नहीं चल पाया। रात को बच्ची को उठाकर ले जाया गया। इसके बाद सुबह उसको दोबारा मां के बराबर में ही छोड़ दिया गया। परिवार वालों की ओर से बताया गया कि उन्हें इस बारे में कोई जानकारी नहीं थी।

पुलिस ने क्या बताया?

इस हत्या की सूचना पुलिस को दी गई। सूचना मिलते ही पुलिस और फोरेंसिक टीम मौके पर पहुंची और सबूत इकठ्ठा किए। जब बच्ची की मां से पूछताछ की गई, तब सास-ससुर के साथ चल रही उसकी अनबन के बारे में पता चला। अवैध संबंधों की वजह से घर में विवाद की बात भी पता चली। इसके बाद मामला खुलता चला गया। पुलिस ने बताया कि बुधवार सुबह बच्ची अपनी मां के साथ सोई थी। तभी सास-ससुर और ननद आए।

पुलिस ने बताया कि इसके बाद ससुर ने ब्लेड दिया और सास ने अपनी पोती का गला काट दिया। ननद इस घिनौने कृत्य को पास खड़ी होकर देखती रही। पुलिस ने दादा-दादी और बुआ को गिरफ्तार कर लिया है।

ट्रैक्टर खरीदने की खुशियां काफूर... बोलेरो से जोरदार टक्कर, मंदिर जा रहे ताई-भतीजी समेत तीन की मौत

आर्यावर्त संवाददाता

शाहबाद (रामपुर)। राणा शुगर मिल के पास मंगलवार की रात बोलेरो और ट्रैक्टर-ट्रॉली में आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। हादसे में बोलेरो सवार रामपुर के मिलक निवासी मनीष गोस्वामी (20) और ट्रैक्टर सवार मुरादाबाद के बिलारी थाना क्षेत्र के गांव गौरा शाहगढ़ निवासी माया देवी (50) पत्नी सुभाष सिंह व उनकी भतीजी आरती (18) पुत्री वीरेंद्र की मौत हो गई। जबकि सात लोग घायल हो गए। मिलक निवासी बबलू गोस्वामी ने बताया कि मंगलवार को मुरादाबाद के बिलारी के मोहल्ला हर्ष नगर निवासी रिश्तेदार उनके घर पर आए थे। देर रात बेटा मनीष गोस्वामी बोलेरो से रिश्तेदारों को छोड़ने के लिए शाहबाद होते हुए बिलारी जा रहा था। जबकि बिलारी के गांव गौरा शाहगढ़ निवासी रामबाबू परिवार के साथ ट्रैक्टर-ट्रॉली से मनोना धाम दर्शन के लिए जा रहा था।

राणा शुगर मिल के पास बोलेरो और ट्रैक्टर-ट्रॉली में आमने-सामने की भिड़ंत हो गई। हादसे के दौरान बोलेरो सवार मनीष गोस्वामी, उमेशनाथ, गोस्वामी, रामौतार गोस्वामी, प्रदीप सिंह के अलावा ट्रैक्टर-ट्रॉली में सवार माया देवी, आरती, अखिलेश, रोहताश, इंदल, लोकेश, विवेक, रामकुंवर और बाबू गंभीर रूप से घायल हो गए। सिर में डाला लगने पर माया देवी और उसकी भतीजी आरती का सिर फट गया। हादसे के बाद चालक ट्रैक्टर सवार सभी घायल पुलिस के पहुंचने से पहले ही सैफनी के निजी अस्पताल ले गए। जहां पर डॉक्टरों ने माया देवी व आरती को मृत घोषित कर दिया। हादसे की सूचना पर पहुंची पुलिस ने बोलेरो सवार घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल भेजा।

'तेरी बीवी तो बला की खूबसूरत...', रोज चिढ़ाते थे दोस्त, फिर पति का सब्र दे गया जवाब, कर डाला ये कांड

आर्यावर्त संवाददाता

बरेली। हर कोई चाहता है कि उसे परियों सी हसीं दुल्हन मिले। लेकिन कभी-कबार ऐसा हो जाना मुसीबत भी बन जाती है। जी हां, उत्तर प्रदेश के बरेली में खूबसूरत बीवी मिलना, युवक के गले की फांद बन गया। यहां एक युवक को उसकी खूबसूरत पत्नी मिलने पर गांव वाले चिढ़ा रहे थे। बार-बार मजाक उड़ाए जाने से युवक को इतना गुस्सा आया कि वह अपने घर की छत पर चढ़ गया और जान देने की धमकी देने लगा। मामला सिरौली थाना क्षेत्र के चकरपुर गांव का है।

गांव में युवक को लोग मजाक में गुरुदेव कहकर बुलाते हैं। जब गांव वालों ने उसकी पत्नी की खूबसूरती को लेकर बार-बार तंज कसा और ताना मारा, तो गुरुदेव को यह बात बहुत बुरी लग गई। उसने गुस्से में आकर कहा कि अब वह अपनी जान दे देगा। इसके बाद वह सीधे घर की छत पर चढ़ गया और नीचे कूदने की धमकी देने लगा।

गांव में मचा हड़कंप, पुलिस को दी सूचना

आखिरकार नीचे उतरा गुरुदेव

लगभग पांच घंटे की मशक्कत और लगातार समझाने-बुझाने के बाद आखिरकार युवक नीचे उतर आया। जैसे ही वह नीचे उतरा, लोगों ने राहत की सांस ली। पुलिस ने युवक को सुरक्षित परिवार को सौंप दिया और आगे कोई ऐसी स्थिति न बने, इसके लिए काउंसलिंग की बात कही।

जैसे ही लोगों को पता चला कि गुरुदेव छत पर चढ़ गया है और कूदने की बात कर रहा है तो पूरे गांव में हड़कंप मच गया। परिजनों और गांव के कुछ समझदार लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची और युवक को समझाने की कोशिश करने लगी।

5 घंटे तक चला मनाने का सिलसिला

पुलिस और ग्रामीणों ने युवक को नीचे उतरने के लिए लगातार समझाया, लेकिन गुरुदेव किसी की बात सुनने को तैयार नहीं था। वो बार-बार यही कह रहा था कि अब जीने का कोई मतलब नहीं है। सब लोग उसका मजाक उड़ाते हैं। पूरे 5 घंटे तक पुलिस और गांव वालों की कोशिश जारी रही।

रेस्क्यू के लिए बिछाए गए गद्दे और जाल

युवक के किसी भी समय नीचे कूदने की आशंका को देखते हुए पुलिस ने घर के नीचे गद्दे और जाल बिछवा दिए। यह सब एहतियात के तौर पर किया गया ताकि अगर वह कूदे भी तो जान बचाई जा सके। पुलिस ने बातचीत के साथ-साथ शांत माहौल बनाने की कोशिश की ताकि युवक का गुस्सा शांत हो सके।

पुलिस ने दी समझदारी की नसीहत

पुलिस ने इस पूरे मामले में गांव वालों को भी समझाया कि किसी की निजी जिंदगी का मजाक उड़ाना ठीक नहीं है। छोटे-छोटे मजाक कई बार बड़ी घटनाओं का कारण बन सकते हैं। गांव के लोग भी इस घटना के बाद काफी गंभीर नजर आए और उन्होंने आगे से सावधानी बरतने की बात कही।

मिलिए बाराबंकी के विनय बाबू से, 14 साल में लिखी उर्दू में विनय रामायण', शायरी में भगवान राम का किया गुणगान

आर्यावर्त संवाददाता

बाराबंकी। उत्तर प्रदेश के बाराबंकी में एक छोटे से गांव असगरनगर मजीठा में रहने वाले विनय बाबू ने उर्दू में रामायण की रचना कर दी है। विनय रामायण नाम से उनकी रचना में भक्ति और शायरी का अनूठा संगम देखने को मिल रहा है। महज जूनियर हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त विनय बाबू को उर्दू भाषा और शेरो-शायरी का शौक बचपन से था। स्कूल आते-जाते उन्होंने कुछ बुजुर्गों से उर्दू के लफ्ज़ सुने थे। यही लफ्ज उनके दिल में उतरते चले गए और फिर धीरे-धीरे जुनून बन गए। विनय बाबू कहते हैं कि उन्होंने काफी रिसर्च किया, लेकिन पता चला कि उर्दू में संपूर्ण रामायण कहीं भी उपलब्ध नहीं है। यह जानकर उन्होंने फैसला किया कि रामायण को जन-जन तक पहुंचाने के लिए

इसे उर्दू भाषा में तो होना ही चाहिए। इसके बाद वह काम पर लग गए और 14 वर्षों की अथक मेहनत के बाद उन्होंने अपनी साधना को 'विनय रामायण' नाम से दुनिया के सामने रख दिया है। उन्होंने अपनी किताब उर्दू में लिखी है और मूल रामायण का भावानुवाद तैयार किया है। विनय बाबू कहते हैं कि उन्होंने विनय रामायण की रचना 500 पन्नों के ग्रंथ में की है। उनका ग्रंथ 24 खंडों में विभाजित है और प्रत्येक खंड में 7 हजार शेर शामिल हैं। उन्होंने बताया कि उनका ग्रंथ संस्कृत अनुवाद का शाब्दिक संस्करण नहीं है, बल्कि रामायण के प्रसंगों को उर्दू शायरी की जुबान में ढाला गया भावानुवाद है। इसे पढ़ते समय पाठकों को रस मिलेगा और श्रीराम चरित मानस की तरह ही इसमें भी लोग डूबते जाएंगे। करना पड़ा ये काम विनय बाबू के मुताबिक इस लक्ष्य को हासिल करना आसान काम नहीं था। अपने ग्रंथ में सटीकता लाने के लिए उन्हें अयोध्या, प्रयागराज यहां तक कि हिमालय तक की यात्राएं करनी पड़ीं। इस दौरान कई बार मुश्किलें आईं, आर्थिक संकट आए, लेकिन जुनून के आगे सब कुछ फीका पड़ गया। अब उनकी इच्छा है कि उनके ग्रंथ का लोकार्पण राज्यपाल के हाथों हो। शायर अजीज बाराबंकवी के शागिर्द रहे विनय अब महाभारत के भावानुवाद की ओर कदम बढ़ा चुके हैं।

शिमला से सिर्फ 16 किलोमीटर बसा है खूबसूरत हिल स्टेशन, भूल जाएंगे विदेश

गर्मियां का मौसम आते ही लोग ठंडी जगहों का रुख रखते हैं। हिल स्टेशन जाने की बात हो तो सबसे पहले शिमला का नाम जरूर आता है। लेकिन शिमला में काफी भीड़-भाड़ रहती है। अगर आप शांति के दो पल बिताना चाहते हैं तो हम आपके लिए एक ऐसी जगह लाए हैं जो शिमला से सिर्फ 16 किलोमीटर दूर है। जहां आपको भीड़ भी कम मिलेगी और आप नेचर का मजा भी ले सकेंगे।

हिमाचल प्रदेश, जिसे देवभूमि भी कहा जाता है, अपने बर्फ से ढके पहाड़ों, हरे-भरे जंगलों और शांत वातावरण के लिए दुनिया भर में मशहूर है. यहां का हर कोना एक नई कहानी कहता है, हर घाटी में कुछ खास छिपा होता है। जब भी हम हिल स्टेशनों की बात करते हैं, तो शिमला का नाम सबसे पहले जुबां पर आता है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि शिमला से मात्र 16 किलोमीटर की दूरी पर एक ऐसा हिल स्टेशन बसा है, जो अपनी खूबसूरती, शांति और वादियों के वजह से किसी भी विदेशी टूरिस्ट डेस्टिनेशन को टक्कर दे सकता है?

यह जगह अभी तक भीड़भाड़ से बची हुई है और यही इसकी सबसे बड़ी खासियत है। अगर आप प्रकृति के करीब जाना चाहते हैं, शहर की हलचल से दूर एक सुकून भरा पल बिताना चाहते हैं, तो यह हिल स्टेशन आपके लिए किसी स्वर्ग से कम नहीं होगा। आइए जानते हैं इस जन्नत सी जगह के बारे में कि यहां कैसे पहुंचे, यहां क्या-क्या देख सकते हैं और जाने का सही समय क्या है?

शिमला के पास की सबसे खूबसूरत जगह

हम बात कर रहे हैं शिमला के पास की सबसे खूबसूरत जगह कुफरी की। यह जगह शिमला से बस 16 किलोमीटर दूर है। यहां आपको कम भीड़-भाड़ देखने को मिलेगी और आप आराम से नेचर के करीब बैठकर सुकून के पल बिता सकते हैं। जिन लोगों को शांति पसंद है उनके लिए यह जगह एकदम परफेक्ट डेस्टिनेशन है। यहां बर्फ से ढकी वादियां, आसमान को चूमते देवदार और चीड़ के पेड़, और शांत वातावरण इसे बेहद खूबसूरत बनाते हैं। यहां की प्राकृतिक सुंदरता इतनी अद्भुत है कि आप कुछ पल के लिए भूल जाएंगे कि आप भारत में हैं।

कुफरी क्यों है खास?

स्नो एडवेंचर का हब

सर्दियों के मौसम में कुफरी बर्फ से ढक जाता है और यह स्कीइंग व स्नोबोर्डिंग जैसी रोमांचक एक्टिविटीज का केंद्र बन जाता है। यहां का कुफरी स्नो एडवेंचर पार्क बच्चों और बड़ों दोनों के लिए आकर्षण का केंद्र है।

हॉर्स राइडिंग और याक राइड का अनुभवः कुफरी में घोड़े और याक की सवारी एक अनोखा अनुभव देती है, खासतौर पर जब आप महल जैसी ऊंची पहाड़ियों के बीच से होकर गुजरते हैं।

हिमालयन नेचर पार्क

नेचर और वाइल्डलाइफ लवर्स के लिए यह पार्क एक खजाने की तरह है। यहां आपको हिमालयी भालू, तेंदुआ, मोनाल (हिमाचल का राज्य पक्षी) जैसे दुर्लभ जीवों को देखने का मौका मिलेगा।

महासू पीक

यह कुफरी की सबसे ऊंची चोटी है। यहां से पूरे हिमालय की बर्फ से ढकी चोटियों का नजारा बेहद लुभावना होता है। यहां तक पहुंचने के लिए घोड़े की सवारी करनी पड़ती है, जो एक अलग ही एक्सपीरियंस देती है।

कुफरी कैसे पहुंचें?

कुफरी का नियरेस्ट एयरपोर्ट शिमला एयरपोर्ट (जुब्बड़हट्टी) है, जो लगभग 40 किलोमीटर दूर है। अगर ट्रेन से आ रहे हैं तो सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन कालका है, जहां से शिमला तक टॉय ट्रेन ली जा सकती है। शिमला से टैक्सी या बस के जरिए आप आसानी से कुफरी पहुंच सकते हैं। आप बाए रोड भी शिमला से कुफरी पहुंच सकते हैं।

कब जाएं?

अगर आप भी कुफरी जाने का प्लान बना रहे तों आपको बतां दे यहां सर्दियों में जाने का सबसे अच्छा समय दिसंबर से फरवरी तक का होता है। इस दौरान यहां खूब बर्फबारी होती है, जहां आप स्कीइंग और स्नो एडवेंचर का मजा ले सकते हैं। वहीं गर्मियों के दौरान यहां मार्च से जून तक जाइए। इस वक्त यहां का मौसम काफी ठंडा और सुहावना होता है, जो गर्मी से राहत दिलाने के लिए एक बढ़िया है।

क्या आपने देखा है थाईलैंड का 'ताजमहल', खूबसूरती मोह लेगी मन

भारत के ताज महल को देखने के लिए दुनियाभर से लोग यहां आते हैं। ये सफेद संगेमरमर से बना है जो बेहद खूबसूरत है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि थाईलैंड में भी ताज महल जैसी एक सफेद और खूबसूरत जगह है , जो अब टूरिस्ट्स के बीच काफी पॉपुलर हो रही है। आज इस आर्टिकल में हम आपको उसी के बारे में बताने जा रहे हैं।

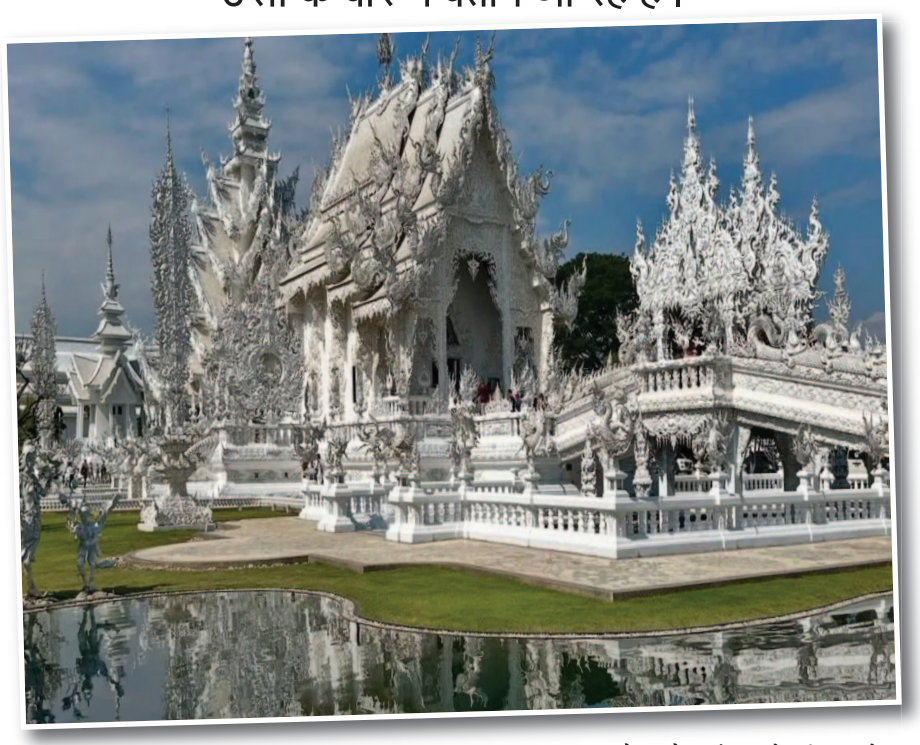

भारत का ताज महल प्यार की निशानी के रूप में जाना जाता है। ये इतना खूबसूरत है कि यहां दुनियाभर लोग आते हैं और इसका दीदार करते हैं। भारत के ताज महल को दुनिया के 7 अजूबों में शामिल किया गया है। लेकिन बहुत कम लोग जानते हैं कि थाईलैंड भी एक ताज महल है , जो एक दम सफेद और बेहद खूबसूरत है। जी हां, हम बात कर रहे हैं थाईलैंड के व्हाइट टेंपल की , जिसे लोकल भाषा में वाट रोंग खुन कहा जाता है।

थाईलैंड के चियांग राय में स्थित ये मंदिर दुनियाभर के टूरिस्ट के आकर्षण का केंद्र बन चुका है। जैसे ही आप इस मंदिर के पास पहुंचते हैं, एक पल के लिए समय जैसे थम जाता है। सफेद संगमरमर, शीशे के टुकड़ों की चमक, और आर्टिस्ट डिजाइन मिलकर इसे एक दम यूनिक और स्वर्ग सा सुंदर बनाते हैं। तो चलिए आज इस आर्टिकल में जानते हैं थाईलैंड के इस ताज महल के बारे में पूरी जानकारी।

कहां स्थित है वाइट टेंपल?

वाइट टेंपल थाईलैंड के उत्तरी भाग में स्थित चियांग राय प्रांत में है। ये शहर बैंकॉक से लगभग 800 किलोमीटर दूर है और थाईलैंड घूमने आने वाले टूरिस्ट्स के बीच काफी तेजी से पॉपुलर होता जा रहा है।

वाइट टेंपल का इतिहास

वाट रोंग खुन की कहानी एक आम मंदिर की तरह नहीं है। 1997 में थाईलैंड के मशहूर कलाकार चालर्मचाई कोसितपिपत ने इस मंदिर को खुद की कल्पना और कला से बनाना शुरू किया था। पहले यह एक पुराना मंदिर था, जो समय के साथ खंडहर बन चुका था। कलाकार ने अपने खर्च पर इसे पूरी तरह से नए रूप में बनाने का निर्णय लिया और इसे एक आधुनिक कला मंदिर में बदल दिया।

टेंपल की खासियत

सफेद रंग और कांच की चमकः मंदिर का पूरा स्ट्रक्चर सफेद रंग में बनाया गया है, जो प्योरिटी और पवित्रता का प्रतीक है। इसकी दीवारों पर कांच के टुकड़े जड़े हुए हैं, जो सूरज की रोशनी में चमकते हैं और मंदिर स्वर्ग सा सुंदर बनाते हैं। सबसे खास बात इसका वॉशरुम प्योर गोल्ड से बना है।

स्वर्ग और नर्क फर्क दिखाता है : मंदिर के मेन एंट्रेंस में पहुंचने के लिए एक पुल पार करना पड़ता है, जिसके नीचे फैले हुए हाथों की आकृतियां दिखाई देती हैं। ये 'नरक' की प्रतीक हैं, जो यह दर्शाती हैं कि आत्मा को स्वर्ग में प्रवेश पाने से पहले पाप से गुजरना पड़ता है।

देखने लायक चीजेंः मंदिर के अंदर आपको पारंपरिक धार्मिक चित्रों के साथ-साथ मॉडर्न पॉप-कल्चर की छवियां भी देखने को मिलती हैं। जैसे सुपरमैन, स्पाइडरमैन, हैलो किट्टी, और यहां तक कि टर्मिनेटर तक।

घूमने का सही समय?

थाईलैंड में नवंबर से फरवरी तक का मौसम ठंडा और सुहावना होता है, जो यहां घूमने के लिए सबसे अच्छा समय माना जाता है। इस दौरान धूप भी हल्की होती है और भीड़ भी कम रहती है। इस समय पर आप थाईलैंड के इस ताज महल का दीदार कर सकते हैं।

उमस भरे मौसम से मिलेगी राहत, इस तरह का हो आपका पहनावा

उमस भरे मौसम में खानपान और स्किन केयर के साथ ही सही कपड़ों का चयन करना भी बहुत जरूरी है, इससे आपको कंफर्टेबल महसूस होगा। आइए जानते हैं इस मौसम में किस तरह के कपड़े पहनना ठीक रहता है।

मौसम में बदलने पर डाइट के साथ ही पहनावे में भी बदलाव किया जाता है। इस समय तेज गर्मी और ह्यूमिडिटी होने के कारण अपने पहनावे का भी खास ख्याल रखना चाहिए। इस दौरान गलत फैब्रिक पहने के कारम इरिटेशन या स्किन से जुड़ी समस्या हो सकती है। जिसके कारण आपका पूरा दिन खराब हो सकता है। कई कपड़े पसीना सोख नहीं पाते हैं, जिसके कारण शरीर में से बदबू आने लगती है।

इसलिए उमस भरे मौसम में सही फैब्रिक चुनना बहुत जरूरी है। जो पसीने को जल्दी सोख लें और कंफर्टेबल महसूस हो। ऐसे में ह्यूमिडिटी के मौसम में आपका पहनावा कैसा होना चाहिए, जिससे स्टाइलिश लुक में आपको कंफर्टेबल महसूस हो। आइए जानते हैं इसके बारे में एक्सपर्ट से

हल्के कपड़े पहने

उमस वाली गर्मी में हल्के और ढीले कपड़े पहनना ज्यादा सही रहेगा। सूती, लिनन और खादी जैसी फ्रेबिक का चयन करें। क्योंकि गर्मी में पसीने बहुत आते हैं और यह कपड़े आसानी से पसीना सोख लेते हैं। आपको इसमें कई डिजाइन और प्रिंट में कपड़े जैसे कि शर्ट, लॉन्ग या शोर्ट कुर्ती, सूट, साड़ी और ट्राउजर मिल जाएंगे, जिसे आप घर, कॉलेज, ऑफिस या ट्रैवल करते समय हर जगह वियर कर सकते हैं। यह कंफर्टेबल भी रहेंगे।

ढीले कपड़े चुनें

इसके साथ ही उमस वाले मौसम में टाइम नहीं बल्कि ढीले कपड़े पहनना ज्यादा सही रहता है। यह पसीना तो आसानी से सोख लेते हैं और इससे शरीर में चीप-चीप महसूस नहीं होता है। कई लोग बहुत टाइट कपड़े पहनते हैं, लेकिन पसीना और गर्मी के कारण शरीर में चिपचिपाहट बनी रहती है। इसलिए उमस से मौसम में ढीले कपड़े पहनना सही रहेगा।

हल्के रंग

गर्मी के मौसम में ज्यादा डार्क की जगह पर हल्के रंग के कपड़े पहनना ज्यादा सही रहता है। क्योंकि हल्के रंग सूरज की किरणों ऐर गर्मी को कम अब्सॉर्ब करते हैं, जिससे शरीर को कम गर्मी महसूस होती है। हल्के रंग को देखने में भी सही लगता है। साथ ही शरीर में तापमान सही बनाए रखने में मदद करते हैं। जिससे गर्मी कम लगती है और आरामदायक महसूस होता है।

फुटवियर

इसके साथ ही आपको फुटवियर और इनरवियर का भी सही चयन करना चाहिए। गर्मी में ऐसे फुटवियर पहनें जिससे पैरों में हवा लगती रहे। क्योंकि ज्यादा पसीने के कारण स्किन से जुड़ी समस्या जैसे कि इरिटेशन, खुजली और रेडनेस हो सकती है।

पहनें इस तरह की ड्रेस

गर्मी के मौसम में कपड़ों में बहुत ही ऑप्शन होते हैं। महिलाओं के लिए टी-शर्ट, टी-स्कर्ट, कुर्ती, फ्लोई ड्रेस, प्लाजो, शॉर्ट ड्रेस मैक्सी या मिडी ड्रेस परफेक्ट ऑप्शन रहेगा। पुरुषों शॉर्ट्स या ढीली टी-शर्ट, पजामा, ट्राउजर, पैंट और कुर्ती खास अवसर पर पहनना सही रहेगा।

कांग्रेस नेताओं के आलोचना करने पर भड़के थरूर

तंज कसते हुए बोले- मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ

नई दिल्ली। अपनी ही पार्टी के नेताओं की आलोचनाओं में घिरे कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने पलटवार किया है और उन्होंने आलोचना करने वाले नेताओं को अति-उत्साही बता दिया है। शशि थरूर का यह बयान कांग्रेस नेता उदित राज के उस बयान के बाद सामने आया है, जिसमें उदित राज ने शशि थरूर के विदेश में दिए गए एक बयान पर आपत्ति जताई थी और उन्हें भाजपा का सुपर प्रवक्ता बता दिया था। शशि थरूर इन दिनों विदेश दौरों पर गए भारत के सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों में से एक का नेतृत्व कर रहे हैं। शशि थरूर ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के साथ पनामा दौरे पर अपने एक भाषण में कहा कि 'भारत सरकार ने हाल के वर्षों में अपनी सोच में बदलाव किया है। जिसके बाद आतंकियों को भी ये अहसास हो गया है कि उन्हें भारत में हमले की कीमत चुकानी पड़ेगी।' थरूर ने सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट स्ट्राइक का जिक्र करते हुए कहा कि 'पहली बार भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक के समय एलओसी पार कर आतंकी ठिकानों पर हमले किए। यहां तक की कारगिल की लड़ाई में भी हमने सीमापार नहीं की थी। इस बार न सिर्फ हमने सीमा पार की है बल्कि अंतरराष्ट्रीय सीमा भी पार की है। हमने पाकिस्तान के मध्य में स्थित पंजाब में नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया।'

कांग्रेस नेता उदित राज ने थरूर पर उठाए सवाल

थरूर की इस टिप्पणी पर उनकी ही पार्टी के नेता उदित राज ने कहा कि 'कांग्रेस सांसद शशि थरूर भाजपा के सुपर प्रवक्ता बन गए हैं। जो भाजपा नेता नहीं कह रहे हैं, वो शशि थरूर, पीएम मोदी और सरकार के बारे में कह रहे हैं। क्या उन्हें (थरूर) पता भी है कि पिछली सरकारों ने क्या किया? वे (केंद्र सरकार) भारतीय सशस्त्र बलों का श्रेय ले रहे हैं। शशि थरूर भाजपा के प्रचार विभाग के प्रवक्ता बने हुए हैं।' उदित राज ने कहा कि 'आप ये कहकर कांग्रेस के स्वर्णिम इतिहास को कैसे कमतर कर सकते हैं कि पीएम मोदी से पहले भारत ने कभी एलओसी पार नहीं की। 1965 की लड़ाई में भारतीय सेना लाहौर तक पहुंच गई थी। साल 1971 में कांग्रेस के समय पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांट दिया गया था। साथ ही यूपीए सरकार के कार्यकाल में कई सर्जिकल स्ट्राइक की गईं, लेकिन उनका ढिंढोरा नहीं पीटा गया। आप पार्टी के प्रति इतने बेईमान कैसे हो सकते हैं, जिस पार्टी ने आपको इतना कुछ दिया।' कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश और वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने भी उदित राज के बयानों को सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था।

अब थरूर ने दिखाया आईना

कांग्रेस नेताओं की आलोचना के निशाने पर आए शशि थरूर ने भी पलटवार किया है। उन्होंने पनामा से सोशल मीडिया पर साझा अपनी एक पोस्ट में कहा कि 'पनामा में एक लंबे और सफल दिन के बाद मुझे मध्यरात्रि में ही कोलंबिया के लिए निकलना है। इसलिए मेरे पास इस सबके के लिए समय नहीं है, लेकिन जो अतिउत्साही लोग उनके बयान की आलोचना कर रहे हैं, उन्हें बता दूं कि मैं केवल आतंकवादी हमलों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई के बारे में बात कर रहा था न कि पिछले युद्धों के बारे में। मैंने बताया कि पूर्व में आतंकी हमलों का जवाब देते हुए हमने एलओसी और अंतरराष्ट्रीय सीमा का ध्यान रखा था, लेकिन हाल के वर्षों में इस सोच में बदलाव आया है। लेकिन हमेशा की तरह ट्रोल्स और मेरे आलोचक मेरे शब्दों को तोड़-मरोड़कर पेश करेंगे, लेकिन मेरे पास ज्यादा बेहतर चीजें हैं करने के लिए। शुभरात्रि'

हिंदी पत्रकारिता दिवस पर मुंबई में व्याख्यान देंगे प्रो .संजय द्विवेदी

भोपाल । मुंबई हिंदी पत्रकार संघ द्वारा 'हिंदी पत्रकारिता दिवस' के मौके पर आयोजित हिंदी सेवा सम्मान समारोह में प्रो.संजय द्विवेदी मुख्य वक्ता के रूप में शामिल होंगे। वे हिंदी पत्रकारिता के 200 वर्ष पूरे होने पर मुख्य व्याख्यान देंगे। कार्यक्रम उत्तर भारतीय संघ भवन, बांद्रा पूर्व मुंबई में 30 मई को अपराह्न 3.30 बजे आयोजित होगा।हिंदी सेवा सम्मान समारोह में हिंदी भाषा के विकास में विशेष योगदान देने वाले लोगों को सम्मानित भी किया जाएगा।

समारोह में महाराष्ट्र सरकार के कौशल विकास व रोजगार मंत्री मंगलप्रभात लोढ़ा मुख्य अतिथि एवं परिवहन मंत्री प्रताप सननाईक बतौर विशिष्ट अतिथि शामिल होंगे।

अनेक होंगे सम्मानित

सम्मान समारोह में मध्यप्रदेश के भोपाल में स्थित माखनलाल चुतर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में जनसंचार विभाग के वि भा गा ध्य क्ष प्रोफेसर डॉ. संजय द्विवेदी को मुख्य वक्ता के तौर पर आमंत्रित किया गया है। प्रो.द्विवेदी भारतीय जनसंचार सं स्था न (आईआईएमसी), नई दिल्ली के महानिदेशक भी रह चुके हैं।

गीतकार समीर सहित

हिंदी सेवा सम्मान में सम्मान मूर्ति के रूप में सुप्रसिद्ध गीतकार समीर अनजान,आजतक के साहिल जोशी, उद्योगपति ज्ञानप्रकाश सिंह,, आयुर्वेद महाविद्यालय नागपुर के डीन प्रोफेसर बृजेश मिश्र, वरिष्ठ पत्रकार विमल मिश्र और यतेंद्र सिंह यादव मौजूद रहेंगे।

क्यों मनाते हैं यह दिन

उल्लेखनीय है कि हर साल 30 मई को हिंदी पत्रकारिता दिवस मनाया जाता है। यह दिन हिंदी भाषा में पत्रकारिता की शुरुआत के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। पंडित जुगल किशोर शुक्ल ने भारत का पहला हिंदी अखबार उदन्त मार्तंड 30 मई 1826 को प्रकाशित किया था। हिंदी पत्रकारिता दिवस हिंदी भाषा में पत्रकारिता के विकास को दर्शाता है

तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में पूर्व SIB प्रमुख को राहत, सुप्रीम कोर्ट ने दिया अंतरिम संरक्षण

नई दिल्ली। तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य आरोपी और तेलंगाना के विशेष खुफिया ब्यूरो (एसआईबी) के पूर्व प्रमुख टी प्रभाकर राव को राहत दी है। सुप्रीम कोर्ट ने उनको दंडात्मक कार्रवाई से अंतरिम संरक्षण दिया। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने टी प्रभाकर राव को जांच अधिकारी के समक्ष पेश होने का निर्देश दिया और कहा कि उनका पासपोर्ट उन्हें उपलब्ध कराया जाए। शीर्ष अदालत ने राव को यह भी निर्देश दिया कि वह पासपोर्ट प्राप्त होने के तीन दिन के भीतर भारत लौट आएंगे।

तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में मुख्य आरोपी राव ने अपनी अग्रिम जमानत याचिका खारिज करने के तेलंगाना हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। मामला सामने आने के बाद से राव फरार चल रहे हैं। उनके अमेरिका में होने का संदेह है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया है और उसका पासपोर्ट रद्द कर दिया गया है। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने राव की अग्रिम जमानत याचिका का कड़ा विरोध किया। मामले की सुनवाई 5 अगस्त को निर्धारित की गई है। 22 मई को हैदराबाद की एक अदालत ने फोन टैपिंग मामले में राव के खिलाफ आदेश जारी किया है। आदेश के मुताबिक अगर राव 20 जून तक अदालत में पेश नहीं होते हैं तो उन्हें भगोड़ा घोषित किया जा सकता है।

एसआईबी के निलंबित डीएसपी समेत चार पुलिस अधिकारियों को हैदराबाद पुलिस ने मार्च 2024 में गिरफ्तार किया था। इन पर विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से खुफिया जानकारी मिटाने और पिछली बीआरएस सरकार के दौरान कथित तौर पर फोन टैपिंग का आरोप है। बाद में उन्हें जमानत मिल गई। पुलिस ने कहा था कि आरोपी उस कथित साजिश का हिस्सा हैं।

मुझे शेर चाहिए, जो कहे, हां ये मेरी बंदी है...खेसारी की हीरोइन अकांक्षा पुरी को इस तरह के लड़के हैं पसंद

एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी ने कई भोजपुरी गाने गाए हैं और अब वो खेसारी लाल के साथ फिल्मों में भी नजर आएंगी। हाल ही में अकांक्षा से पूछा गया कि उन्हें किस टाइप का लड़का चाहिए तो उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लड़का चाहिए जो शेर जैसा हो।

साउथ और हिंदी सिनेमा में काम करने के बाद अब भोजपुरी फिल्मों में अकांक्षा पुरी नजर आएंगी। अकांक्षा ने पवन सिंह और खेसारी लाल के साथ कुछ भोजपुरी गाने किए हैं और अब वो खेसारी लाल के साथ एक फिल्म में भी नजर आएंगी। अकांक्षा पुरी को लेकर कई अफवाह रही है कि उनका खेसारी लाल के साथ अफेयर है। कई तस्वीरों-वीडियो में भी इसके सबूत देखने को मिले, लेकिन अकांक्षा ने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया और उन्हें नए लड़के की तलाश भी है।

हाल ही में एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी ने फिल्मीज्ञान को एक इंटरव्यू दिया है। इसमें उन्होंने अलग-अलग मुद्दों पर बात की। उन्होंने बताया कि वो भोजपुरी सिनेमा में लॉन्ग टाइम के लिए काम करेंगी या नहीं। इसके अलावा भी अकांक्षा से जो भी सवाल हुए उनका उन्होने खुलकर जवाब दिया। इसी इंटरव्यू में जब अकांक्षा ने बताया कि उन्हें किस तरह के लड़के अपनी लाइफ में चाहिए।

किस तरह का लड़का चाहती हैं अकांक्षा पुरी?

इंटरव्यू में पूछा गया कि अकांक्षा पुरी को डेट के लिए लड़कों में क्या-क्या क्वालिटी आपको चाहिए? इसपर आकांक्षा पुरी ने कहा, 'मैं अक्सर सुनती हूं कि कोई लड़का मुझे पसंद करता है, लेकिन उसके अंदर प्रपोज करने की हिम्मत नहीं। ऐसा होता है कि जब कोई लड़का पावरफुल लड़की देखता है जो अपने आप में केपेबल और सेल्फ डिपेंडेंट होती है तो लड़के खुद को ही रिजेक्ट कर देते हैं, भई...ये मौका मुझको दो ना।'

'आजकल वो लड़के पता नहीं कहां हैं जो आगे बढ़कर लड़की को प्रपोज कर दिया करते थे। देखो।।मुझे ऐसा लड़का चाहिए जो डंके की चोट पर आकर बोले कि उसे मुझसे प्यार है, सबके सामने बोले और साथ देने की हिम्मत रखे। छुपने-छिपाने वाला प्यार मुझे नहीं पसंद क्योंकि हाई एंड सीक वाला खेल तो मैं बचपन में भी पसंद नहीं करती थी। आप घर में मेरा साथ दे सकते हैं तो सबके सामने भी मेरा साथ दें।'

'मैं अगर किसी के साथ हूं तो मैं चौड़े में बोलूंगी कि मैं किसी के साथ हूं और हम रिलेशन में हैं। मुझे मोस्टली चूहे, गीदड़ और खरगोश मिल रहे हैं लेकिन असल में मुझे शेर जैसा लड़का चाहिए जो सबके सामने कह सके कि और मैं इसको प्यार करता हूं, पूरी दुनिया के सामने मेरा हाथ पकड़ सके कि हां अकांक्षा मेरी है तब तो मैं उसके साथ हूं वरना डरपोक नहीं चाहिए। कमरे में हाथ पकड़ने वाले तो मिल ही जाते हैं दुनिया के सामने हाथ पकड़कर प्यार का ऐलान करने वाले मुश्किल से मिलते हैं और मुझे वही चाहिए।'

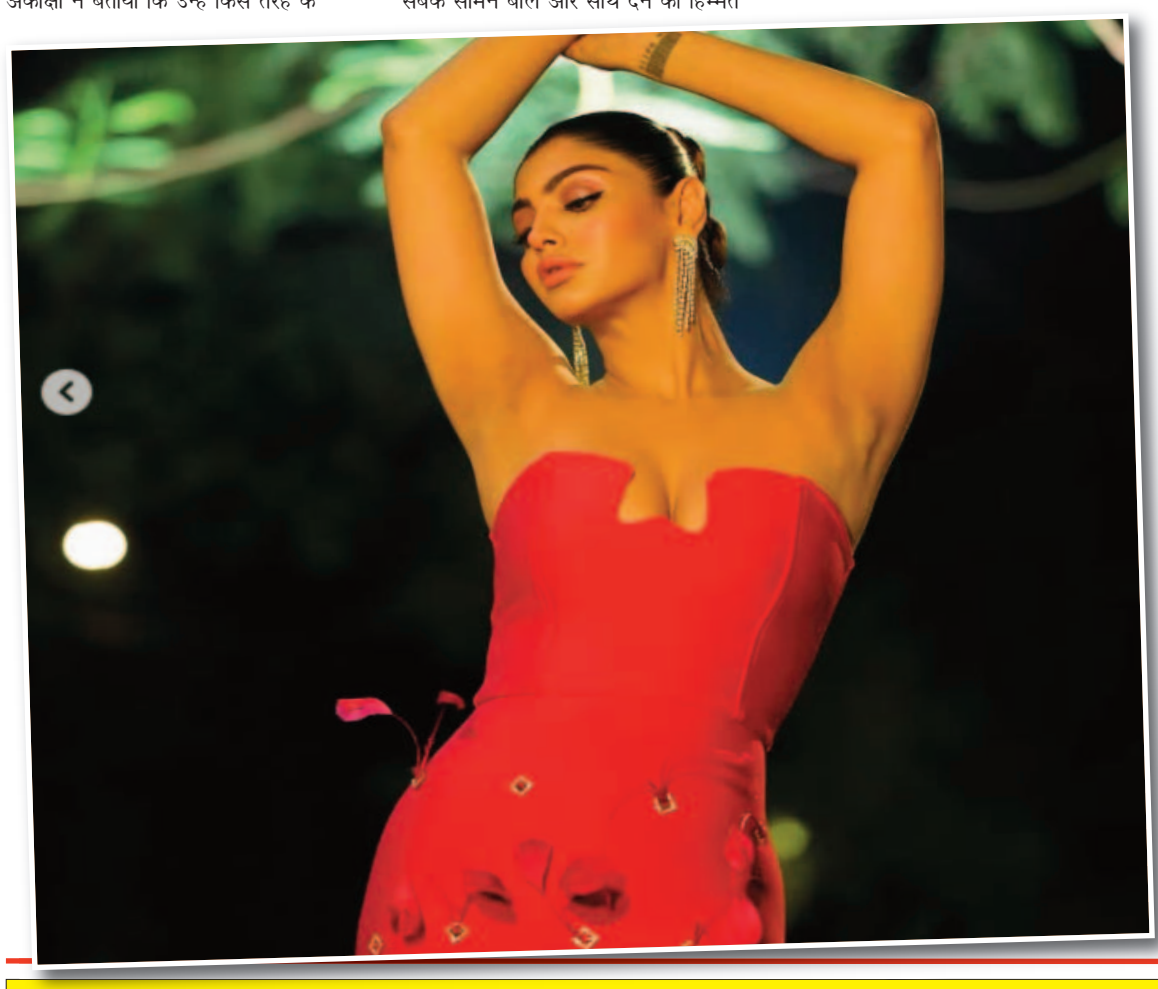

'लाल परी' बन दीपिका पादुकोण ने बिखेरा ग्लैमर, रेड ड्रेस में हीरा पहन दिखीं रॉयल क्वीन

बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस और इंटरनेशनल ब्रांड एंबेसडर दीपिका पादुकोण एक बार फिर अपने ग्लैमरस लुक और शाही अंदाज से चर्चा में आ गई हैं। हाल ही में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित हुए कार्टियर के हाई ज्वेलरी इवेंट में दीपिका का रेड कारपेट लुक सबका दिल जीत ले गया। इस इवेंट की तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं और फैन्स दीपिका की तारीफों के पुल बांधते नहीं थक रहे।

रेड कलर की एलीगेंट ड्रेस और कार्टियर की शानदार ज्वेलरी में सजी दीपिका ने जैसे ही इवेंट में एंट्री ली, कैमरे खुद-ब-खुद उनकी ओर घूम गए। बालों को सिंपल लेकिन स्टाइलिश अंदाज में सेट कर उन्होंने अपने लुक को और भी रॉयल टच दिया। इस हाई प्रोफाइल गाला में हॉलीवुड की अभिनेत्री जोई सल्डाना समेत कई बड़े सितारे भी मौजूद थे, लेकिन दीपिका का जलवा सबसे अलग और दमदार रहा।

दीपिका ने क्या पहना?

दीपिका ने आशी स्टूडियो का 2 साल पुराना फ्लोर लेंथ अटायर पहना। उन्होंने ओवर साइज जैकेट कैरी की, जिसका ड्रैमेटिक और ओवरसाइज स्टाइल परफेक्ट नजर आया। स्टाइल के साथ अटायर का रेड कलर भी उनके एलिगेंस को डबल कर गया। उनके 58 कैरेट के हार ने भी सभी का ध्यान खींचा।

इंटरनेशनल लग्जरी ब्रांड का चेहरा बनीं एक्ट्रेस

दीपिका पादुकोण सिर्फ एक एक्ट्रेस नहीं, बल्कि एक ग्लोबल आइकन बन चुकी हैं। उन्होंने साल 2017 में एक बड़ी छलांग लगाते हुए एक इंटरनेशनल लग्जरी ब्रांड का पहला भारतीय चेहरा बनने का गौरव हासिल किया था। इसके बाद से ही उन्होंने भारत को फैशन और लग्जरी की दुनिया में एक अलग मुकाम दिलाया है। आज वो न सिर्फ बॉलीवुड बल्कि पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति और स्टाइल की पहचान बन चुकी हैं।

दीपिका के लुक पर फैंस का रिएक्शन

फैंस का कहना है कि दीपिका पादुकोण सिर्फ एक अभिनेत्री नहीं बल्कि एक ट्रेंडसेटर हैं, जो हर बार अपने अंदाज से फैशन वर्ल्ड में नया स्टैंडर्ड सेट करती हैं। सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीरों पर लोग कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा- 'ये है असली रॉयल लुक!', वहीं दूसरे ने लिखा, 'हर बार दीपिका खुद को ही पीछे छोड़ देती हैं।'

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com

कांग्रेस नेताओं के आलोचना करने पर भड़के थरूर

तंज कसते हुए बोले- मेरे पास करने के लिए बहुत कुछ

नई दिल्ली। अपनी ही पार्टी के नेताओं की आलोचनाओं में घिरे कांग्रेस सांसद शशि थरूर ने पलटवार किया है और उन्होंने आलोचना करने वाले नेताओं को अति-उत्साही बता दिया है। शशि थरूर का यह बयान कांग्रेस नेता उदित राज के उस बयान के बाद सामने आया है, जिसमें उदित राज ने शशि थरूर के विदेश में दिए गए एक बयान पर आपत्ति जताई थी और उन्हें भाजपा का सुपर प्रवक्ता बता दिया था। शशि थरूर इन दिनों विदेश दौरों पर गए भारत के सात सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडलों में से एक का नेतृत्व कर रहे हैं। शशि थरूर ने सर्वदलीय प्रतिनिधिमंडल के साथ पनामा दौरे पर अपने एक भाषण में कहा कि 'भारत सरकार ने हाल के वर्षों में अपनी सोच में बदलाव किया है। जिसके बाद आतंकियों को भी ये अहसास हो गया है कि उन्हें भारत में हमले की कीमत चुकानी पड़ेगी।' थरूर ने सर्जिकल स्ट्राइक और बालाकोट स्ट्राइक का जिक्र करते हुए कहा कि 'पहली बार भारत ने सर्जिकल स्ट्राइक के समय एलओसी पार कर आतंकी ठिकानों पर

हमले किए। यहां तक की कारगिल की लड़ाई में भी हमने सीमापार नहीं की थी। इस बार न सिर्फ हमने सीमा पार की है बल्कि अंतरराष्ट्रीय सीमा भी पार की है। हमने पाकिस्तान के मध्य में स्थित पंजाब में नौ आतंकी ठिकानों को निशाना बनाया।'

कांग्रेस नेता उदित राज ने थरूर पर उठाए सवाल

थरूर की इस टिप्पणी पर उनकी ही पार्टी के नेता उदित राज ने कहा कि 'कांग्रेस सांसद शशि थरूर भाजपा के सुपर प्रवक्ता बन गए हैं। जो भाजपा नेता नहीं कह रहे हैं, वो शशि थरूर, पीएम मोदी और सरकार के बारे में कह रहे हैं। क्या उन्हें (थरूर) पता भी है कि पिछली सरकारों ने क्या किया? वे (केंद्र सरकार) भारतीय सशस्त्र बलों का श्रेय ले रहे हैं। शशि थरूर भाजपा के प्रचार विभाग के प्रवक्ता बने हुए हैं।' उदित राज ने कहा कि 'आप ये कहकर कांग्रेस के स्वर्णिम इतिहास को कैसे कमतर कर सकते हैं कि पीएम मोदी से पहले भारत ने कभी एलओसी पार नहीं की। 1965 की लड़ाई में भारतीय सेना लाहौर तक पहुंच गई थी। साल 1971 में कांग्रेस के समय पाकिस्तान को दो हिस्सों में बांट दिया गया था। साथ ही यूपीए सरकार के कार्यकाल में कई सर्जिकल स्ट्राइक की गईं, लेकिन उनका ढिंढोरा नहीं पीटा गया। आप पार्टी के प्रति इतने बेईमान कैसे हो सकते हैं, जिस पार्टी ने आपको इतना कुछ दिया।' कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश और वरिष्ठ नेता पवन खेड़ा ने भी उदित राज के बयानों को सोशल मीडिया पर पोस्ट किया था।

अब थरूर ने दिखाया आईना

कांग्रेस नेताओं की आलोचना के निशाने पर आए शशि थरूर ने भी पलटवार किया है। उन्होंने पनामा से सोशल मीडिया पर साझा अपनी एक पोस्ट में कहा कि 'पनामा में एक लंबे और सफल दिन के बाद मुझे मध्यरात्रि में ही कोलंबिया के लिए निकलना है। इसलिए मेरे पास इस सबके के लिए समय नहीं है, लेकिन जो अतिउत्साही लोग उनके बयान की आलोचना कर रहे हैं, उन्हें बता दूं कि मैं केवल आतंकवादी हमलों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई के बारे में बात कर रहा था न कि पिछले युद्धों के बारे में। मैंने बताया कि पूर्व में आतंकी हमलों का जवाब देते हुए हमने एलओसी और अंतरराष्ट्रीय सीमा का ध्यान रखा था, लेकिन हाल के वर्षों में इस सोच में बदलाव आया है। लेकिन हमेशा की तरह ट्रोल्स और मेरे आलोचक मेरे शब्दों को तोड़-मरोड़कर पेश करेंगे, लेकिन मेरे पास ज्यादा बेहतर चीजें हैं करने के लिए। शुभरात्रि'

तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में पूर्व SIB प्रमुख को राहत, सुप्रीम कोर्ट ने दिया अंतरिम संरक्षण

नई दिल्ली। तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में सुप्रीम कोर्ट ने मुख्य आरोपी और तेलंगाना के विशेष खुफिया ब्यूरो (एसआईबी) के पूर्व प्रमुख टी प्रभाकर राव को राहत दी है। सुप्रीम कोर्ट ने उनको दंडात्मक कार्रवाई से अंतरिम संरक्षण दिया। न्यायमूर्ति बीवी नागरत्ना और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा की पीठ ने टी प्रभाकर राव को जांच अधिकारी के समक्ष पेश होने का निर्देश दिया और कहा कि उनका पासपोर्ट उन्हें उपलब्ध कराया जाए। शीर्ष अदालत ने राव को यह भी निर्देश दिया कि वह पासपोर्ट प्राप्त होने के तीन दिन के भीतर भारत लौट आएंगे।

तेलंगाना फोन टैपिंग मामले में मुख्य आरोपी राव ने अपनी अग्रिम जमानत याचिका खारिज करने के तेलंगाना हाईकोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की थी। मामला सामने आने के बाद से राव फरार चल रहे हैं। उनके अमेरिका में होने का संदेह है। पुलिस अधिकारी ने बताया कि उसके खिलाफ रेड कॉर्नर नोटिस जारी किया गया है और उसका पासपोर्ट रद्द कर दिया गया है। सुनवाई के दौरान सॉलिसिटर जनरल तुषार मेहता और वरिष्ठ अधिवक्ता सिद्धार्थ लूथरा ने राव की अग्रिम जमानत याचिका का कड़ा विरोध किया। मामले की सुनवाई 5 अगस्त को निर्धारित की गई है।

हैदराबाद की अदालत ने दिया था आदेश

22 मई को हैदराबाद की एक अदालत ने फोन टैपिंग मामले में राव के खिलाफ आदेश जारी किया है। आदेश के मुताबिक अगर राव 20 जून तक अदालत में पेश नहीं होते हैं तो उन्हें भगोड़ा घोषित किया जा सकता है।

एसआईबी के निलंबित डीएसपी समेत चार पुलिस अधिकारियों को हैदराबाद पुलिस ने मार्च 2024 में गिरफ्तार किया था। इन पर विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से खुफिया जानकारी मिटाने और पिछली बीआरएस सरकार के दौरान कथित तौर पर फोन टैपिंग का आरोप है। बाद में उन्हें जमानत मिल गई। पुलिस ने कहा था कि आरोपी उस कथित साजिश का हिस्सा हैं, जिसमें उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों के नागरिकों पर निगरानी रखकर राजनीतिक उद्देश्यों के लिए एसआईबी के संसाधनों का दुरुपयोग किया।

पुलिस ने पहले कहा था कि मामले में आरोपी बनाए गए लोगों ने अन्य लोगों के साथ मिलकर कई लोगों के प्रोफाइल अवैध रूप से बनाए । उन पर एसआईबी में गुप्त रूप से निगरानी करने और कुछ लोगों के इशारे पर एक राजनीतिक पार्टी के पक्ष में पक्षपातपूर्ण तरीके से उनका इस्तेमाल करने, अपने अपराधों के सबूतों को गायब करने के लिए रिकॉर्ड नष्ट करने की साजिश रचने का आरोप है।

मुझे शेर चाहिए, जो कहे, हां ये मेरी बंदी है...खेसारी की हीरोइन अकांक्षा पुरी को इस तरह के लड़के हैं पसंद

एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी ने कई भोजपुरी गाने गाए हैं और अब वो खेसारी लाल के साथ फिल्मों में भी नजर आएंगी। हाल ही में अकांक्षा से पूछा गया कि उन्हें किस टाइप का लड़का चाहिए तो उन्होंने कहा कि उन्हें ऐसा लड़का चाहिए जो शेर जैसा हो।

साउथ और हिंदी सिनेमा में काम करने के बाद अब भोजपुरी फिल्मों में अकांक्षा पुरी नजर आएंगी। अकांक्षा ने पवन सिंह और खेसारी लाल के साथ कुछ भोजपुरी गाने किए हैं और अब वो खेसारी लाल के साथ एक फिल्म में भी नजर आएंगी। अकांक्षा पुरी को लेकर कई अफवाह रही है कि उनका खेसारी लाल के साथ अफेयर है। कई तस्वीरों-वीडियो में भी इसके सबूत देखने को मिले, लेकिन अकांक्षा ने कभी इस बात को स्वीकार नहीं किया और उन्हें नए लड़के की तलाश भी है।

हाल ही में एक्ट्रेस अकांक्षा पुरी ने फिल्मीज्ञान को एक इंटरव्यू दिया है। इसमें उन्होंने अलग-अलग मुद्दों पर बात की। उन्होंने बताया कि वो भोजपुरी सिनेमा में लॉन्ग टाइम के लिए काम करेंगी या नहीं। इसके अलावा भी अकांक्षा से जो भी सवाल हुए उनका उन्होने खुलकर जवाब दिया। इसी इंटरव्यू में जब अकांक्षा ने बताया कि उन्हें किस तरह के लड़के अपनी लाइफ में चाहिए।

किस तरह का लड़का चाहती हैं अकांक्षा पुरी?

इंटरव्यू में पूछा गया कि अकांक्षा पुरी को डेट के लिए लड़कों में क्या-क्या क्वालिटी आपको चाहिए? इसपर आकांक्षा पुरी ने कहा, 'मैं अक्सर सुनती हूं कि कोई लड़का मुझे पसंद करता है, लेकिन उसके अंदर प्रपोज करने की हिम्मत नहीं। ऐसा होता है कि जब कोई लड़का पावरफुल लड़की देखता है जो अपने आप में केपेबल और सेल्फ डिपेंडेंट होती है तो लड़के खुद को ही रिजेक्ट कर देते हैं, भई...ये मौका मुझको दो ना।'

'आजकल वो लड़के पता नहीं कहां हैं जो आगे बढ़कर लड़की को प्रपोज कर दिया करते थे। देखो।।मुझे ऐसा लड़का चाहिए जो डंके की चोट पर आकर बोले कि उसे मुझसे प्यार है, सबके सामने बोले और साथ देने की हिम्मत रखे। छुपने-छिपाने वाला प्यार मुझे नहीं पसंद क्योंकि हाई एंड सीक वाला खेल तो मैं बचपन में भी पसंद नहीं करती थी। आप घर में मेरा साथ दे सकते हैं तो सबके सामने भी मेरा साथ दें।'

'मैं अगर किसी के साथ हूं तो मैं चौड़े में बोलूंगी कि मैं किसी के साथ हूं और हम रिलेशन में हैं। मुझे मोस्टली चूहे, गीदड़ और खरगोश मिल रहे हैं लेकिन असल में मुझे शेर जैसा लड़का चाहिए जो सबके सामने कह सके कि और मैं इसको प्यार करता हूं, पूरी दुनिया के सामने मेरा हाथ पकड़ सके कि हां अकांक्षा मेरी है तब तो मैं उसके साथ हूं वरना डरपोक नहीं चाहिए। कमरे में हाथ पकड़ने वाले तो मिल ही जाते हैं दुनिया के सामने हाथ पकड़कर प्यार का ऐलान करने वाले मुश्किल से मिलते हैं और मुझे वही चाहिए।'

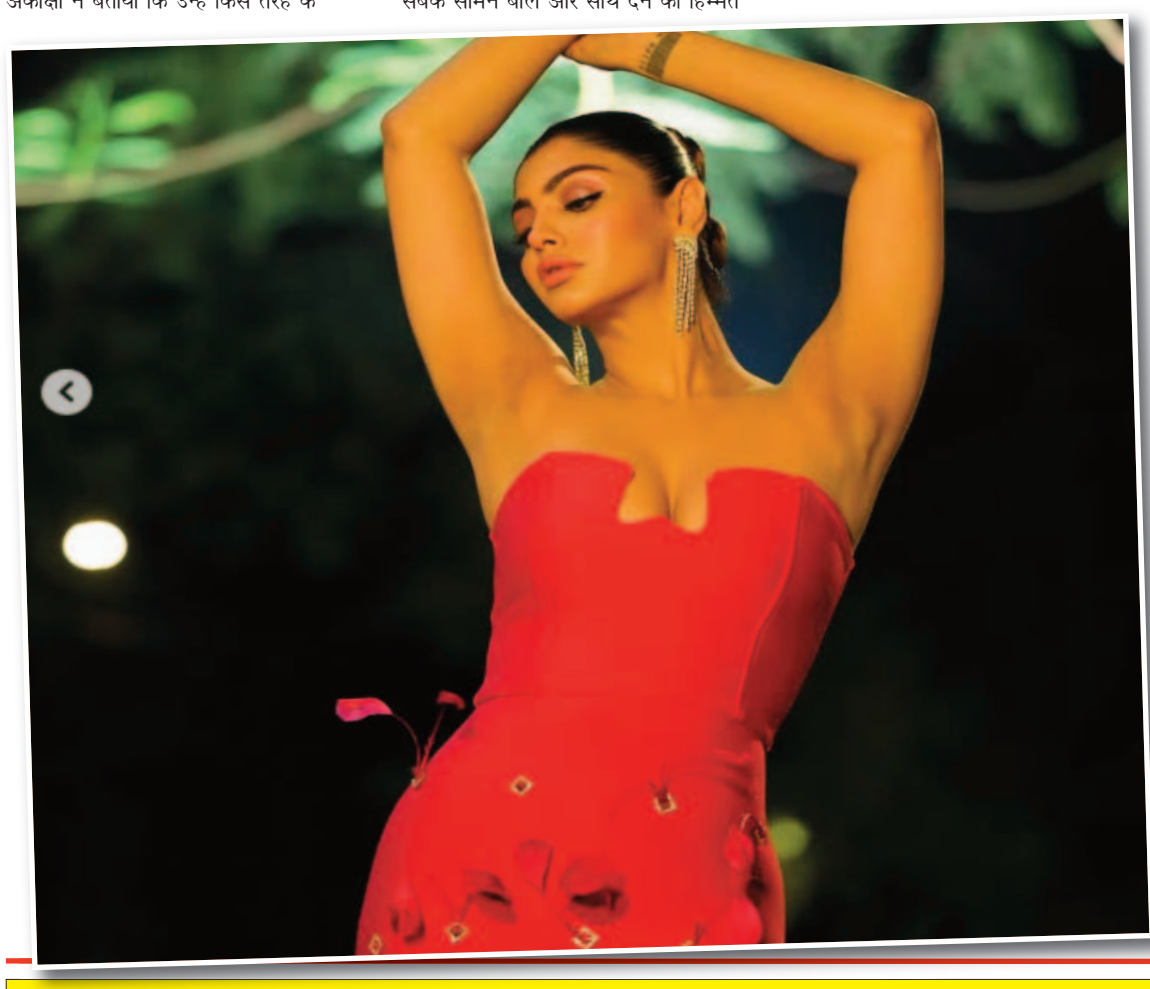

'लाल परी' बन दीपिका पादुकोण ने बिखेरा ग्लैमर, रेड ड्रेस में हीरा पहन दिखीं रॉयल क्वीन

बॉलीवुड की टॉप एक्ट्रेस और इंटरनेशनल ब्रांड एंबेसडर दीपिका पादुकोण एक बार फिर अपने ग्लैमरस लुक और शाही अंदाज से चर्चा में आ गई हैं। हाल ही में स्वीडन की राजधानी स्टॉकहोम में आयोजित हुए कार्टियर के हाई ज्वेलरी इवेंट में दीपिका का रेड कारपेट लुक सबका दिल जीत ले गया। इस इवेंट की तस्वीरें सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं और फैन्स दीपिका की तारीफों के पुल बांधते नहीं थक रहे।

रेड कलर की एलीगेंट ड्रेस और कार्टियर की शानदार ज्वेलरी में सजी दीपिका ने जैसे ही इवेंट में एंट्री ली, कैमरे खुद-ब-खुद उनकी ओर घूम गए। बालों को सिंपल लेकिन स्टाइलिश अंदाज में सेट कर उन्होंने अपने लुक को और भी रॉयल टच दिया। इस हाई प्रोफाइल गाला में हॉलीवुड की अभिनेत्री जोई सल्डाना समेत कई बड़े सितारे भी मौजूद थे, लेकिन दीपिका का जलवा सबसे अलग और दमदार रहा।

दीपिका ने क्या पहना?

दीपिका ने आशी स्टूडियो का 2 साल पुराना फ्लोर लेंथ अटायर पहना। उन्होंने ओवर साइज जैकेट कैरी की, जिसका ड्रैमेटिक और ओवरसाइज स्टाइल परफेक्ट नजर आया। स्टाइल के साथ अटायर का रेड कलर भी उनके एलिगेंस को डबल कर गया। उनके 58 कैरेट के हार ने भी सभी का ध्यान खींचा।

इंटरनेशनल लग्जरी ब्रांड का चेहरा बनीं एक्ट्रेस

दीपिका पादुकोण सिर्फ एक एक्ट्रेस नहीं, बल्कि एक ग्लोबल आइकन बन चुकी हैं। उन्होंने साल 2017 में एक बड़ी छलांग लगाते हुए एक इंटरनेशनल लग्जरी ब्रांड का पहला भारतीय चेहरा बनने का गौरव हासिल किया था। इसके बाद से ही उन्होंने भारत को फैशन और लग्जरी की दुनिया में एक अलग मुकाम दिलाया है। आज वो न सिर्फ बॉलीवुड बल्कि पूरी दुनिया में भारतीय संस्कृति और स्टाइल की पहचान बन चुकी हैं।

दीपिका के लुक पर फैंस का रिएक्शन

फैंस का कहना है कि दीपिका पादुकोण सिर्फ एक अभिनेत्री नहीं बल्कि एक ट्रेंडसेटर हैं, जो हर बार अपने अंदाज से फैशन वर्ल्ड में नया स्टैंडर्ड सेट करती हैं। सोशल मीडिया पर उनकी तस्वीरों पर लोग कमेंट कर रहे हैं। एक यूजर ने लिखा- 'ये है असली रॉयल लुक!', वहीं दूसरे ने लिखा, 'हर बार दीपिका खुद को ही पीछे छोड़ देती हैं।'

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक प्रभात पांडेय द्वारा साई ऑफसेट प्रिंटर्स 40, वासुदेव भवन कैसरबाग, लखनऊ (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 2/74, विक्रांत खंड, गोमती नगर, लखनऊ से प्रकाशित।
शाखा कार्यालय: S-15/109, सेक्टर -15, इंदिरा नगर, लखनऊ। समस्त लेख, रचनाओं एवं विज्ञापन में लेखन और विज्ञापनदाताओं के अपने विचार हैं। इसके लिए आर्यावर्त क्रांति की कोई जिम्मेदारी नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश ही होगा। RNI No: UPHIN/2014/57034 Website: aryavartkranti.com
*सम्पादक: प्रभात पांडेय सम्पर्क: 9839909595, 8765295384 Email: aryavartkrantidainik@gmail.com